इस्लाम की शिक्षाएँ बच्चों के लिए

अहमद वॉन डेन्फ़र

विषय-सूची

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है"

दो शब्द

यह किताब अस्ल में अंग्रेज़ी किताब 'Islam for children' का हिन्दी तर्जमा है। यह किताब बच्चों के लिए लिखी गई है। इसका मक़सद बच्चों को दीन की सही जानकारी देना है, ताकि बच्चे अपने पालनहार ख़ुदा की हिदायत और रहनुमाई से वाक़िफ़ हों और उनका रिश्ता ख़ुदा की तालीमात से मज़बूत हो।

इस किताब में बच्चों के ज़ेहन, उनकी नफ़सियात और उनकी दिलचस्पी को सामने रखते हुए बात की गई है। हम बच्चों के माँ-बाप और उनके सरपरस्तों और उस्तादों से गुज़ारिश करते हैं कि वे इस किताब को अपने घरों और क्लासों में रखें और बच्चों के अन्दर इस किताब से ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा उठाने के लिए शौक़ पैदा करें। हम यह भी अर्ज़ करना चाहते हैं कि हमने हर उम्र के बच्चों के लिए इस्लाम की शिक्षाओं पर आधारित और भी किताबें तैयार की हैं। आप हमसे सम्पर्क करके ये किताबें मंगवा सकते हैं।

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि॰) दिल्ली इस्लाम की जानकारी देने के लिए हिन्दी ज़बान में किताबें तैयार करने के मुबारक काम में लगा हुआ है। हमने कोशिश की है इस किताब में कोई ग़लती न रहे। फिर भी अगर कोई ग़लती नज़र आए या आपका कोई सुझाव हो तो उससे हमें ज़रूर अवगत कराएँ। हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।

—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

सेक्रेट्री

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट

(दिल्ली)

भाग-1

ईमान

ईमान

अध्याय-1

मुहम्मद (सल्ल॰)

मुहम्मद (सल्ल॰) बचपन में ही यतीम हो गए थे। आप (सल्ल॰) के अब्बा जान आप (सल्ल॰) के पैदा होने से पहले ही अल्लाह को प्यारे हो गए थे और अम्मी जान भी उस समय अल्लाह को प्यारी हो गईं थीं जब नबी (सल्ल॰) अभी बहुत छोटी उम्र के थे। इसलिए आप (सल्ल॰) की परवरिश पहले दादा अब्दुल-मुत्तलिब ने और फिर बाद में चचा अबू-तालिब ने की। दोनों ही इस यतीम बच्चे से बहुत प्यार करते थे और दोनों ने बहुत ही ध्यान से आप (सल्ल॰) की परवरिश की। जब आप (सल्ल॰) बड़े हुए और काम करने के क़ाबिल हुए तो आप (सल्ल॰) भेड़-बकरियों को चराने के लिए मक्का शहर से बाहर ले जाया करते थे।

नबी (सल्ल॰) अभी बच्चे ही थे कि आप (सल्ल॰) ने बकरियों को चराने का काम शुरू कर दिया। बाद में, जब आप (सल्ल॰) बड़े हुए तो चचा अबू-तालिब आप (सल्ल॰) को अपने साथ तिजारती सफ़र पर ले जाया करते थे। मक्कावाले अबू-तालिब की तरह व्यापारी थे और वे तिजारत (व्यापार) के लिए लम्बे-लम्बे सफ़र किया करते थे। वे अपने ऊँटों पर बहुत-सा सामान मक्का लाया करते थे। आप (सल्ल॰) के लिए यह तजरिबा बहुत ही अच्छा और दिलचस्प था और आप (सल्ल॰) जब पूरी तरह जवान हुए तो ख़ुद इस तरह के क़ाफ़िले ले जाने लगे।

मक्का में एक मालदार औरत रहती थीं, जिनका नाम ख़दीजा (रज़ि॰) था। वे बेवा थीं। उन्होंने एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ नबी (सल्ल॰) को अपनी तरफ़ से व्यापार के लिए चुना। ख़दीजा (रज़ि॰) ने यह चुनाव बहुत सोच-समझकर किया था, क्योंकि आप (सल्ल॰) बहुत ही ईमानदार और कामयाब व्यापारी थे। बाद में आप (सल्ल॰) और ख़दीजा (रज़ि॰) की शादी हो गई और वे दोनों अपने बच्चों के साथ मक्का में बहुत ही ख़ुशहाल और शान्तिपूर्ण ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

जैसे-जैसे वक़्त गुज़रता गया और नबी (सल्ल॰) की उम्र बढ़ने लगी तो आप (सल्ल॰) ने बहुत-सी चीज़ों के बारे में गहराई से सोचना शुरू किया। हालाँकि आप (सल्ल॰) की घरेलू ज़िन्दगी बहुत ही ख़ुशहाल थी, लेकिन बहुत-सी परेशानियाँ आप (सल्ल॰) को सताने लगीं। आप (सल्ल॰) अकसर मक्का से बाहर पहाड़ियों पर चले जाते और वहाँ 'हिरा' नाम की एक गुफा में जाकर बैठते और एकान्त में शान्ति के साथ सोचते कि "यह कितनी हैरत की बात है कि मैं, जो कि एक यतीम था, आज एक मालदार आदमी हूँ, मेरे पास एक अच्छी बीवी और प्यारे-प्यारे बच्चे हैं, लेकिन फिर भी मैं पूरी तरह ख़ुश नहीं हूँ!"

मुहम्मद (सल्ल॰) अच्छी तरह जानते थे कि ऐसा क्यों है, क्योंकि आप (सल्ल॰) ख़ुद मक्का में पाई जानेवाली उस परेशानी को लम्बे समय से बरदाश्त करते आ रहे थे। मक्का के लोग मालदार होने के बावजूद न तो ग़रीबों की मदद करते थे, न उन्हें यतीमों की देखभाल की कोई परवाह थी और न बीमारों के इलाज का कोई ख़याल। मक्का के लोग बस ज़्यादा-से-ज़्यादा माल हासिल करने में दिलचस्पी रखते थे, जितना ज़्यादा माल उनके पास आता वे उससे और ज़्यादा हासिल करने की चाहत रखते! मक्कावालों की यही वे बातें थीं जो मुहम्मद (सल्ल॰) को सालों से परेशान किए हुए थीं।

एक दिन की बात है कि मुहम्मद (सल्ल॰) हिरा पहाड़ी की गुफा में बैठे हुए थे, उस वक़्त आप (सल्ल॰) की उम्र 40 साल थी, अचानक आप (सल्ल॰) को एक फ़रिश्ता नज़र आया, जिनका नाम जिबरील था। उन्होंने मुहम्मद (सल्ल॰) से कहा—

> "पढ़ो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पैदा किया इनसान को जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से। पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा करीम है जिसने क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया, इनसान को वह इल्म दिया जिसे वह न जानता था।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-96 अलक़, आयतें-1 से 5)

मुहम्मद (सल्ल॰) फ़ौरन समझ गए कि इसका क्या मतलब है। आप

(सल्ल॰) को लगा कि मुझे अभी मक्का जाकर लोगों को बताना चाहिए कि वह अल्लाह ही है जिसने इनसानों को पैदा किया। एक इनसान को ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है उन सबको अल्लाह ही ने पैदा किया है। इसलिए इनसान को सिर्फ़ अल्लाह का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। उसे सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करनी चाहिए और उसी का हुक्म मानना चाहिए। अल्लाह चाहता है कि ग़रीबों और बीमारों की देखभाल की जाए, ताकि वे भी एक अच्छी और इज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ार सकें। मरने के बाद, इन कोशिशों का इनसान को बेहतरीन इनाम दिया जाएगा। लेकिन जो लोग जान-बूझकर बुरे काम करते हैं उनको दर्दनाक अज़ाब दिया जाएगा, सिवाय इसके कि वे अल्लाह से माफ़ी माँग लें और जो बुरे काम उन्होंने किए हों उनसे वे तौबा कर लें।

पहले तो मुहम्मद (सल्ल॰) बहुत परेशान हुए, क्योंकि आप (सल्ल॰) ने इससे पहले कभी फ़रिश्ता देखा ही नहीं था। लेकिन बहुत ही जल्दी उन्हें समझ में आ गया कि अस्ल में फ़रिश्ते ने उन सवालों के जवाब दिए हैं जो उनको परेशान कर रहे थे। कुछ दिनों तक तो मुहम्मद (सल्ल॰) को समझ में ही नहीं आया कि वह कौन है जो इस काम में उनकी मदद कर रहा है? फिर आप (सल्ल॰) जान गए कि अस्ल में वह अल्लाह है जो उनकी मदद कर रहा है। मुहम्मद (सल्ल॰) को इस बात पर हैरत होती थी कि मक्का के लोग इतने लालची और ग़रीबों की मदद करने में इतने तंगदिल क्यों हैं! अब आप (सल्ल॰) को पता चला कि ऐसा क्यों था। आप (सल्ल॰) समझ गए कि ऐसा सिर्फ़ इसलिए है कि वे लोग अल्लाह के नाफ़रमान हैं। अल्लाह ने इनसान को पैदा किया और उन सब चीज़ों को भी जो इस दुनिया में मौजूद हैं, इसलिए इनसान के लिए ज़रूरी है कि वह एक अल्लाह का कहना माने।

जब मुहम्मद (सल्ल॰) वापस शहर पहुँचे तो आप (सल्ल॰) के साथ जो कुछ हुआ और जो कुछ जिबरील (अलैहि॰) ने आप (सल्ल॰) से कहा था वह सब आप (सल्ल॰) ने अपनी बीवी हज़रत ख़दीजा (रजि॰) को बता दिया। हज़रत ख़दीजा (रजि॰) ने सब कुछ सुनकर अपने शौहर से कहा, "अल्लाह कभी आपको रुसवा नहीं करेगा, क्योंकि आप अच्छे काम करते हैं, आप

लोगों को जोड़े रखते हैं, कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं, ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों की मदद करते हैं, मेहमानों की ख़ातिरदारी करते हैं और सच्चाई के रास्ते में आनेवाली परेशानियों को बरदाश्त करते हैं।"

मुहम्मद (सल्ल॰) बहुत ख़ुश हुए कि आप (सल्ल॰) की तरह ख़दीजा (रजि॰) भी अल्लाह पर यकीन और भरोसा रखती हैं। फिर आप (सल्ल॰) ने जिबरील (अलैहि॰) और उस पैग़ाम के बारे में जो उन्होंने आप (सल्ल॰) को दिया था अपने दोस्तों को बताना शुरू किया। मुहम्मद (सल्ल॰) की बातों पर शुरू में बहुत कम लोगों ने ध्यान दिया। ज़्यादातर लोगों ने आप (सल्ल॰) को नज़र अन्दाज़ कर दिया, क्योंकि वे ज़्यादा-से-ज़्यादा दौलत कमाने में लगे हुए थे और अल्लाह के बारे में सोचने के लिए न तो उनके पास वक़्त था और न ही वे उसको जानने के लिए तैयार थे।

इस दौरान और इसके बाद भी जिबरील (अलैहि॰) मुहम्मद (सल्ल॰) के सामने आते रहे और वही एक बात याद दिलाते रहे। मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह ने अपना नबी चुना था और आप (सल्ल॰) को यह काम सौंपा गया था कि आप (सल्ल॰) लोगों को अच्छाई का हुक्म दें और उन्हें बताएँ कि एक अल्लाह के सिवा किसी दूसरे खुदा की इबादत न करें। मुहम्मद (सल्ल॰) के लिए ज़रूरी था कि वे लोगों को बताएँ कि वे उन ग़रीबों पर अपना पैसा ख़र्च करें जिनके पास अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए पैसा नहीं है।

आख़िरकार, मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह का पैग़ाम लेकर मक्कावालों के पास जाने लगे। आप (सल्ल॰) ने अल्लाह का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाने के लिए बहुत ही सुन्दर शब्दों का इस्तेमाल करना शुरू किया, इस उम्मीद पर कि इस तरीक़े से बात उनके दिलों में उतर जाए। आप (सल्ल॰) कहते कि ऐ लोगो! जब तुम्हारे पास तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा खाना हो और तुम्हारे क़रीब कोई ऐसा ग़रीब हो जो भूखा हो तो अपना कुछ खाना उस ग़रीब को दे दिया करो। इसी तरह अपने कपड़ों में से उन्हें कपड़े भी पहनने के लिए दे दिया करो। बीमारों की तीमारदारी किया करो और यतीमों की देखभाल किया करो। अगर तुम ये सब काम करोगे, जैसा कि अल्लाह चाहता है, तो अल्लाह तुम्हें इसका बेहतरीन बदला देगा। ऐसा न करने पर मुहम्मद (सल्ल॰)

ने लोगों को चेतावनी भी दी कि अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें दर्दनाक सज़ा दी जाएगी।

बदक़िस्मती से मक्का के ज़्यादातर लोगों ने उन बातों का मज़ाक़ उड़ाया जो मुहम्मद (सल्ल॰) ने उनको बताईं और इससे भी बुरी बात यह कि उन्होंने एक अल्लाह की इबादत का इनकार कर दिया और उसी बात को ज़्यादा अहमियत देते रहे कि ज़्यादा-से-ज़्यादा दौलत इकट्ठी की जाए। यहाँ तक कि उनमें से कुछ लोगों ने तो प्यारे नबी (सल्ल॰) पर पत्थर भी बरसाए और जो लोग मुहम्मद (सल्ल॰) की बात मानने लगे थे और एक अल्लाह पर ईमान ले आए थे, उनमें से कुछ को मार भी डाला। मक्कावालों की दुश्मनी इतनी बढ़ गई कि उन्होंने फ़ैसला कर लिया कि मुहम्मद (सल्ल॰) और उनके परिवारवालों, रिश्तेदारों और दोस्तों को शहर से बाहर निकाल दिया जाना चाहिए। इसलिए उन्होंने उन सबको मक्का से बाहर एक पहाड़ी घाटी में भेज दिया और किसी को भी इस बात की इजाज़त नहीं थी कि वहाँ उन्हें देखने जाए या उन्हें खाना पहुँचाए। इस वीरान जगह में उन्हें लगभग तीन साल तक रहना पड़ा। इस दौरान नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि जब उनके पास खाने के लिए कुछ न बचा तो अकसर पेड़ की पत्तियाँ खाकर गुज़ारा करते।

मक्का में नबी (सल्ल॰) और आपके माननेवालों की ज़िन्दगी पहले से भी ज़्यादा बदतर हालत को पहुँच गई। मुहम्मद (सल्ल॰) की बीवी हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) अल्लाह को प्यारी हो गईं। नबी (सल्ल॰) बहुत परेशान हो गए थे। तभी जिबरील (अलैहि॰) ने ज़ाहिर होकर नबी (सल्ल॰) को बताया कि अल्लाह आप की मदद करना चाहता है। फ़रिश्ते ने कहा कि आपको अपने साथियों और परिवारवालों के साथ मक्का से दूर एक दूसरे शहर मदीना चले जाना चाहिए, क्योंकि वहाँ के लोग अल्लाह के फ़रमान (वाणी) को सुनने के लिए बेचैन हैं।

इसलिए, मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपने घरवालों और अपने साथियों को मक्का छोड़कर मदीना जाने का हुक्म दे दिया। उसके बाद उन सभी लोगों ने मक्का छोड़ दिया जो एक अल्लाह पर ईमान लाए थे और उसी की इबादत

करते थे। सबसे आख़िर में मुहम्मद (सल्ल॰) और उनके क़रीबी साथी हज़रत अबू-बक्र (रज़ि) ने मक्का छोड़ा। मक्का के लोग मुहम्मद (सल्ल॰) को मक्का से बाहर जाने नहीं देना चाहते थे। अब वे आप (सल्ल॰) को मार डालना चाहते थे, क्योंकि मुहम्मद (सल्ल॰) उनके बुरे कामों के लिए एक चुनौती बन गए थे। लेकिन मुहम्मद (सल्ल॰) मक्का से उस वक़्त निकल जाने में कामयाब हो गए, जब मक्कावालों ने उन्हें मारने के सारे हथकंडे इस्तेमाल कर लिए थे। मुहम्मद (सल्ल॰) के जवान और बहादुर चचेरे भाई हज़रत अली (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) के बिस्तर पर लेट गए, ताकि मक्कावालों को लगे कि मुहम्मद (सल्ल॰) अभी यहीं हैं। लेकिन मुहम्मद (सल्ल॰) और हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) काफ़ी दूर जा चुके थे, और इस तरह कोई भी उन तक नहीं पहुँच सका। उन्होंने अपने-आपको एक गुफा में छिपा लिया।

जब लोगों को पता चला कि मुहम्मद (सल्ल॰) के बिस्तर पर जो आदमी है वह अली (रज़ि॰) हैं और मुहम्मद (सल्ल॰) तो जा चुके हैं तो उन्हें बहुत ग़ुस्सा आया। लेकिन वे अब कुछ नहीं कर सकते थे, क्योंकि मुहम्मद (सल्ल॰) उनकी पहुँचे से पहले ही बहुत दूर जा चुके थे।

मदीना के हालात मक्का के हालात से बिलकुल अलग थे। यहाँ दुश्मन के मुक़ाबले में मुहम्मद (सल्ल॰) के दोस्त ज़्यादा थे। लेकिन मक्का के लोगों ने यहाँ भी आप (सल्ल॰) को चैन से न रहने दिया। उन्होंने मदीना तक आप (सल्ल॰) का पीछा किया, ताकि वे लोग आप (सल्ल॰) से जंग करें। लेकिन अल्लाह ने प्यारे नबी (सल्ल॰) और आप (सल्ल॰) के साथियों की मदद की और दुश्मनों से उन्हें महफ़ूज़ रखा।

मदीना में मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह का पैग़ाम जिबरील (अलैहि॰) के ज़रिए से हासिल करते रहे। इन पैग़ामों को एक किताब में लिखा जाता रहा जिसे 'क़ुरआन' नाम दिया गया। क़ुरआन में हम हर वह बात पढ़ सकते हैं जो अल्लाह ने इनसान से कही है।

नबी (सल्ल॰) और आप (सल्ल॰) के साथियों ने मदीना में एक मस्जिद बनाई जिसमें वे दिन में हर रोज़ पाँच वक़्त की नमाज़ें पढ़ा करते थे। साल

में एक बार वे एक महीने के रोज़े रखते थे। इस महीने में वे दिन में न कुछ खाते थे और न पीते थे। वे अल्लाह के लिए खाना-पीना छोड़कर अपनी तरबियत (प्रशिक्षण) करते थे। इस तरह के तजरिबे करके उन्होंने कम-से-कम खाना-पीना सीख लिया। इसलिए उनके पास ग़रीबों को देने के लिए काफ़ी ज़्यादा खाना बचता था। वे अपने माल में से भी कुछ माल ग़रीबों को दिया करते थे। मुहम्मद (सल्ल॰) और आपके साथी एक अल्लाह पर ईमान रखते और उसी की इबादत करते थे। वे अल्लाह के फ़रमाँबरदार थे और उसके हुक्मों की पैरवी करते थे। इसलिए उन्हें 'मुस्लिम' कहा जाता था। वे लोग जो अल्लाह पर ईमान लाएँ, एक अल्लाह की इबादत करें और क़ुरआन के मुताबिक़ अमल करें उन्हें मुसलमान कहते हैं।

लेकिन जो लोग एक अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और उसके हुक्मों को मानने से इनकार करते हैं यहाँ तक कि जंगें लड़कर मुसलमानों को मार देना चाहते हैं, वे मुसलमान नहीं हैं। वे ग़ैर-मुस्लिम हैं।

कई सालों तक मदीना में मुहम्मद (सल्ल॰) और आप (सल्ल॰) की पैरवी करनेवाले (अनुयायी) दुश्मनों के हमलों से अपना बचाव करते रहे, और कई बार तो उन्हें दुश्मनों के ख़िलाफ़ मजबूरन हथियार भी उठाने पड़े। लेकिन इन सब जंगों में अल्लाह ने मुहम्मद (सल्ल॰) और मुसलमानों की मदद की। कुछ दिनों के बाद ग़ैर-मुस्लिमों ने समझना शुरू कर दिया कि यह अल्लाह की मदद ही है जिससे आप (सल्ल॰) हमारे मुक़ाबले में और ज़्यादा ताक़तवर होते जा रहे हैं। इसलिए, आख़िरकार उन्होंने अपने-आपसे कहा कि हमें लड़ना बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि अल्लाह से ज़्यादा ताक़तवर कोई नहीं है। हम मुहम्मद (सल्ल॰) को नहीं हरा सकते, क्योंकि अल्लाह उनकी मदद करता है। इसलिए बेहतरी इसी में है कि हम भी अल्लाह पर ईमान ले आएँ और उसकी इबादत करें।

मुहम्मद (सल्ल॰) और मुसलमानों को बहुत ख़ुशी हुई कि सालों से चली आ रही लड़ाई आख़िरकार ख़त्म हो गई। अल्लाह ने उनकी मदद की जैसा कि उसने वादा किया था। अब वे मक्का वापस जा सकते थे, यह वही मक्का था जहाँ कभी वे अल्लाह पर ईमान लाए थे और बहुत थोड़ी तादाद

में थे। जब वे मक्का पहुँचे तो उन्होंने मिलकर नमाज़ अदा की। उसके बाद उनमें से कुछ वहीं रह गए और जो मदीना में ही बस गए थे वापस चले गए। मदीना में रहनेवाले ये मुसलमान साल में एक बार मक्का का सफ़र करते, क्योंकि काबा (अल्लाह का घर) वहीं पर है। काबा पत्थर से बना एक बड़ा-सा घर है जिसमें कोई खिड़की नहीं है। यह एक बड़े घन (Cube) की तरह दिखता है। इसे अल्लाह के नबी हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने बनाया था, जो मुहम्मद (सल्ल०) से सैंकड़ों बरस पहले यहाँ रहा करते थे। जब कभी आप काबा को देखेंगे तो आपको याद आ जाएगा कि अल्लाह ने इनसान से क्या कहा है, और यह कि इनसान को क्या करना चाहिए। यानी उनको एक अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए, उसी एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और नेक काम करते रहना चाहिए। ये तमाम इनसानों के लिए अल्लाह के हुक्म (आदेश) हैं। अल्लाह ने अपना पैग़ाम देकर नबियों को इनसानों के पास भेजा, जो तमाम इनसानों का और इस पूरी कायनात का पैदा करनेवाला है। उन नबियों में मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आख़िरी नबी हैं, नबी (सल्ल०) के इस दुनिया से चले जाने के बाद आप (सल्ल०) ने अपने पीछे क़ुरआन छोड़ा जिसमें अल्लाह के पैग़ाम लिखे हुए हैं।

क़ुरआन में अल्लाह के दूसरे नबियों की भी सच्ची क़िस्से हैं जो मुहम्मद (सल्ल०) से पहले गुज़रे हैं। उनमें से कुछ क़िस्से आप इस किताब में पढ़ेंगे।

अध्याय-2

अल्लाह और क़ुरआन

अल्लाह तआला के वे पैग़ाम जो जिबरील (अलैहि॰) ने आकर मुहम्मद (सल्ल॰) को सुनाए, एक किताब में लिखे हुए हैं। इस किताब को क़ुरआन कहा जाता है। क़ुरआन में हम उन सभी बातों को पढ़ सकते हैं जो अल्लाह हमसे और तमाम इनसानों से कहता है।

क़ुरआन में हम दूसरे कई नबियों की कहानियाँ भी पढ़ सकते हैं। अल्लाह ने अपने नबियों को इनसानों के पास इसलिए भेजा, ताकि वे एक अल्लाह की इबादत और नेक काम करें। इसी लिए मुहम्मद (सल्ल॰) से पहले बहुत-से नबी दुनिया में आए। (अल्लाह की उन सबपर सलामती और रहमतें नाज़िल हों।)

क़ुरआन में हम और भी बहुत-सी दूसरी चीज़ें तलाश कर सकते हैं। एक मुस्लिम होने के नाते हम उन सब बातों पर ईमान लाते हैं और हमें उन सब बातों पर अमल भी करना चाहिए जो इस क़ुरआन में लिखी हुई हैं। जब हम क़ुरआन में लिखी बातों को जानते और समझते हैं और उनपर अमल करते हैं तो हम एक अच्छे मुस्लिम बन जाते हैं।

जो कुछ हम अल्लाह के बारे में जानते हैं वह सब हमें अल्लाह ही ने बताया है। अल्लाह ने हज़रत जिबरील (अलैहि॰) के ज़रिए से मुहम्मद (सल्ल॰) को बताया और मुहम्मद (सल्ल॰) ने लोगों तक वह सब कुछ पहुँचा दिया जो हज़रत जिबरील (अलैहि॰) ने उन्हें बताया था।

अल्लाह ही एक अकेला ख़ुदा है। अल्लाह के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। इसका मतलब यह है कि एक अकेले अल्लाह ने ही इनसान, ज़मीन, चाँद, सूरज और सितारों को बनाया है। अल्लाह ही है जिसने इन सब चीज़ों को पैदा किया।

यक़ीनन, आप जानते हैं कि ज़मीन पर बहुत-सी चीज़ें ख़ुद-ब-ख़ुद काम

करती हैं। जैसे, जब कभी आप ज़मीन में कोई बीज डालेंगे और कुछ दिनों तक इन्तिज़ार करेंगे, तो ज़मीन से पौधा उग आएगा। ज़मीन में बीज डालना आसान है, लेकिन आपको एक अहम सवाल अपने-आपसे ज़रूर पूछना चाहिए। वह यह कि यह ज़मीन हमें कहाँ से मिली? और ये बीज हमें कहाँ से मिले? आप कह सकते हैं कि ये बीज हमें दूसरे पौधों से मिलते हैं, और आपका यह जवाब बिलकुल सही है। लेकिन ज़रा सोचिए! इन दूसरे पौधों को भी तो उगने के लिए ज़मीन की ज़रूरत है। तो फिर यह ज़मीन कहाँ से आई?

ज़मीन बालू, खनिज, लवण और दूसरे पदार्थों के बारीक कणों से मिलकर बनी है। बालू और दूसरी चीज़ें कहाँ से आती हैं? पौधों को उगने के लिए पानी की भी ज़रूरत होती है, तो यह पानी कहाँ से आता है? ज़मीन से निकलने और बढ़ने के लिए पौधों को सूरज की रौशनी की भी ज़रूरत होती है। यह सूरज की रौशनी कहाँ से मिलती है? हमें रात और दिन की भी ज़रूरत होती है, ताकि गिना जा सके कि पौधों के उगने में कितने दिन लगते हैं?

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं कि बीज को ज़मीन के अन्दर रख देना और पौधे के उग आने तक इन्तिज़ार करना आसान है, लेकिन इस काम को करने के लिए जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है उनको कोई नहीं बना सकता। कोई भी ज़मीन, हवा, रौशनी और पानी, दिन और रात को नहीं बना सकता है। ठीक यही मामला दूसरी तमाम चीज़ों के साथ भी है।

मिसाल के तौर पर आदमी घर बना सकता है। इसके लिए उसे पत्थरों की ज़रूरत होती है, लेकिन वह ख़ुद पत्थर नहीं बना सकता। आदमी कार और हवाई जहाज़ बना सकता है, इसके लिए उसे दूसरी चीज़ों के साथ लोहे और रबर की भी ज़रूरत पड़ती है। बात फिर वही है कि आदमी ख़ुद लोहा और रबर नहीं बना सकता। लोहा कुछ चट्टानों में पाया जाता है, जब इन चट्टानों को गर्म किया जाता है तो लोहा पिघलकर बह निकलता है। रबर कुछ ख़ास तरह के पेड़ों से हासिल की जाती है। जब इन पेड़ों की छालों को काटा जाता है तो रबर तरल रूप में बाहर निकल आती है। लेकिन वे चट्टानें

और पेड़, जिनसे लोहा और रबर प्राप्त की जाती है, आदमी ने तो नहीं बनाए। चतुराई और सूझ-बूझ रखने के बावजूद आदमी ये सब काम नहीं कर सकता। इसका मतलब यह हुआ कि जब आदमी कार और हवाई जहाज़ या कोई और चीज़ बनांता है तो उन्हीं चीज़ों को इस्तेमाल कर रहा होता है जो पहले से धरती पर मौजूद हैं। अगर ये सब चीज़ें इस्तेमाल के लिए मौजूद न होतीं तो इनसान कार, हवाई जहाज़ और दूसरी चीज़ें नहीं बना सकता था। हर वह चीज़ जिसे इनसान किसी चीज़ को बनाने के लिए इस्तेमाल करता है उसे अल्लाह ने ही बनाया है। अल्लाह ने वे सब चीज़ें बना दी हैं जिनकी इनसान को ज़रूरत है, ताकि लोग आराम से रह सकें, घर बना सकें, खेती कर सकें, अपने खाने और कपड़ों आदि के लिए जानवरों को पाल सकें, यहाँ तक कि कार और हवाई जहाज़ भी बना सकें। अल्लाह की मदद के बग़ैर आदमी कुछ भी नहीं कर सकता। इसी कारण कहा जा सकता है कि अगर अल्लाह की मरज़ी न होती तो इनसान का वुजूद ही न होता। वह अल्लाह ही है जिसने ज़मीन, हवा, पानी, सूरज और कई दूसरी चीज़ों को पैदा किया जो इनसान की ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी हैं। इन चीज़ों के बिना इनसान ज़िन्दा नहीं रह सकता, यानी इनसान का ज़मीन पर वुजूद ही नहीं होता। वह अल्लाह ही है जिसने इनसान को पैदा किया और वही है जो उसे ज़िन्दा रखता है। हर चीज़ अल्लाह ही की तरफ़ से है। इसलिए हम कहते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है।

वह अल्लाह ही है जिसने हर चीज़ को पैदा किया। अल्लाह ही ने इनसान को यह भी बताया कि उसे क्या करना चाहिए, क्योंकि यही उसके लिए अच्छा है। अल्लाह ने अपनी बातें बताने के लिए इनसान के पास अपने नबी और मार्गदर्शक भेजे। इनसान को चाहिए कि वह हमेशा अल्लाह को याद रखे और उसका शुक्र अदा करता रहे और जो हुक्म भी उसने अपने नबियों के ज़रिए से उस तक पहुँचाए हैं उनको मानता रहे।

अध्याय-3

फ़रिश्ते

हज़रत जिबरील (अलैहि॰) अल्लाह का पैग़ाम प्यारे नबी मुहम्मद (सल्ल॰) के पास लेकर आए, इसलिए हम उन्हें पैग़म्बर (अल्लाह का पैग़ाम लानेवाला) फ़रिश्ता कहते हैं। और भी बहुत-से फ़रिश्ते हैं जिनके बारे में हम क़ुरआन में पढ़ सकते हैं।

हममें से हर एक के साथ हमेशा दो फ़रिश्ते रहते हैं। ये फ़रिश्ते उन सब बातों और कामों को लिखते रहते हैं जो हम करते हैं। वे हमारे हर अच्छे और बुरे काम को लिखते रहते हैं। हम इन फ़रिश्तों को "किरामन कातिबीन" (लिखनेवाले मोहतरम फ़रिश्ते) कहते हैं। इनके अलावा और भी फ़रिश्ते हैं। जैसे कि एक फ़रिश्ता है जो मरते वक़्त लोगों की मदद करता है। यह फ़रिश्ता मौत लेकर आता है, इसलिए हम इसे मौत का फ़रिश्ता (म-लकुल-मौत) कहते हैं।

हम फ़रिश्तों को नहीं देख सकते, क्योंकि वे ऐसी चीज़ से बने हैं जिसे हमारी आँख देख नहीं सकती। फिर भी हम जानते हैं कि वे हैं, क्योंकि अल्लाह ने हमें उनके बारे में बताया है। कभी-कभी हम उनकी मौजूदगी को भी महसूस कर सकते हैं।

फ़रिश्तों को अल्लाह ने पैदा किया, जिस तरह इनसान और दूसरी चीज़ों को पैदा किया। फ़रिश्ते अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करते हैं और उसके सेवक हैं। वे बहुत-से काम अंजाम देते हैं और अल्लाह के हुक्म से पूरी दुनिया को चला रहे हैं।

हम जानते हैं कि सूरज का निकलना और डूबना, आसमान में बादलों का चलना, बारिश का होना, पेड़-पौधों का उगना और जो कुछ कायनात (ब्रह्माण्ड) में होता है इन सबको पैदा करनेवाला और इनको क़ायम रखनेवाला अल्लाह ही है। अल्लाह की मरज़ी के बग़ैर कुछ भी नहीं हो

सकता। ठीक इसी तरह, अल्लाह ने फ़रिश्तों को बनाया, जो उसका हुक्म मानते हैं। वे उसकी मरज़ी को अमल में लाते हैं और इस बात का ख़ास ख़याल रखते हैं कि हर काम अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ हो। वे अल्लाह के फ़रमाँबरदार सेवक हैं।

अल्लाह चाहता है कि इनसान उसका हुक्म माने, उसी से दुआएँ माँगे और नेक काम करे। वह चाहता है कि इनसान अल्लाह के बारे में जाने। इसी लिए तो हज़रत जिबरील (अलैहि॰) ने मुहम्मद (सल्ल॰) को आकर बताया कि अल्लाह इनसान से क्या काम कराना चाहता है। हज़रत जिबरील (अलैहि॰) की यही ज़िम्मेदारी थी। जिबरील (अलैहि॰) के ज़रिए से अल्लाह ने अपना पैग़ाम मुहम्मद (सल्ल॰) से पहले बहुत-से नबियों को भेजा था, ताकि इनसान इस बात को याद रखे और भूल न जाए कि अल्लाह उससे क्या चाहता है। इस बारे में हम क़ुरआन में पढ़ सकते हैं। यहाँ पर हज़रत आदम (अलैहि॰), नूह (अलैहि॰) इबराहीम (अलैहि॰), मूसा (अलैहि॰) और दूसरे नबियों (अलैहि॰) की जानकारियाँ दी जा रही हैं। इन सभी नबियों ने लोगों से कहा था—

"तुम सबको एक अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए
उसी एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए
और सिर्फ़ नेक और अच्छे अमल करने चाहिएँ।

अध्याय-4

हज़रत आदम (अलैहि॰)

हज़रत आदम (अलैहि॰) पहले इनसान थे, जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया। उन्हें ज़मीन पर रहने के लिए पैदा किया गया था। लेकिन इबलीस को यह पसन्द नहीं था। इबलीस को अल्लाह ने आग से पैदा किया था, वह फ़रिश्तों के साथ रहता था। उसने सोचा कि वह हज़रत आदम (अलैहि॰) से बेहतर है, इसलिए वह हज़रत आदम (अलैहि॰) का दुश्मन हो गया और उसने हज़रत आदम (अलैहि॰) को अल्लाह का नाफ़रमान बनाने का फ़ैसला किया।

हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) जन्नत में रहा करते थे, जहाँ उन्हें अल्लाह ने रखा था। जन्नत हमारी सोच से कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत जगह है। वहाँ न गर्मी है, न सर्दी। हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) को वहाँ न भूख लगती थी, न प्यास। यह एक और बात थी जिसको कि इबलीस पसन्द नहीं करता था। इसलिए इबलीस हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) के पास आया और उनसे एक ख़ास क़िस्म के पेड़ का फल खाने के लिए उकसाने लगा। फ़ौरन हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) को याद आया कि अल्लाह ने तो उन्हें उस पेड़ के पास भी जाने से मना किया था। इसलिए उन्होंने इबलीस की बात नहीं मानी। लेकिन इबलीस लगातार कोशिश करता रहा। उसने उन्हें यह कहकर ललचाया कि अगर उन्होंने उस पेड़ का फल खा लिया तो वे अमर हो जाएँगे और वे फ़रिश्तों की तरह हो जाएँगे।

आख़िरकार, इबलीस के बार-बार पीछे पड़ने की वजह से, हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) ने हार मान ली। उन्होंने इबलीस के कहने पर यक़ीन कर लिया और अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ उस पेड़ का फल खा बैठे। लेकिन इबलीस का कहा मानने की

अपनी कमज़ोरी और अल्लाह की नाफ़रमानी पर उन्हें बहुत ही जल्द पछतावा हुआ। हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) को बहुत दुख हुआ और अल्लाह से माफ़ी माँगी। अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, क्योंकि वह बड़ा माफ़ करनेवाला है। फिर अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) से कहा कि तुम्हें कुछ समय के लिए ज़मीन पर जाकर रहना है। लेकिन अल्लाह ने यह वादा किया कि अगर उन्होंने और उनकी औलाद ने भविष्य में उसकी फ़रमाँबरदारी की तो वे वापस जन्नत में भेज दिए जाएँगे।

अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहि॰) को यह भी बताया कि तुम अल्लाह के पहले नबी होगे। बहुत-से नबी इनसानों की तरफ़ भेजे जाएँगे। अगर इनसानों ने नबियों की बात मानी तो मरने के बाद उन्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। लेकिन अगर उन्होंने नबियों की बात न मानी तो उन्हें इबलीस के साथ जहन्नम में भेज दिया जाएगा।

इसलिए हज़रत आदम (अलैहि॰) और उनकी बीवी हज़रत हव्वा (अलैहि॰) ज़मीन पर आए। ज़मीन पर उनके यहाँ बच्चे पैदा हुए और फिर उनके बच्चों के यहाँ बच्चे पैदा हुए। इस तरीक़े से एक-के-बाद-एक इनसानी नस्ल ज़मीन पर फैलती रही और अल्लाह उन सबकी तरफ़ अपने नबी भेजता रहा। उन नबियों ने कहा कि एक अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया है। अल्लाह ने तुम्हारे लिए पेड़-पौधे और जानवर पैदा किए, ताकि तुम उनके ज़रिए से ज़िन्दगी गुज़ार सको। इसलिए अल्लाह का शुक्र अदा करो और हमेशा अच्छे काम करो।

यही बातें हज़रत आदम (अलैहि॰) ने, जो कि पहले नबी थे, अपने बच्चों को बताई थीं। उनके बाद और बहुत-से नबी आए, और मुहम्मद (सल्ल॰) आख़िरी नबी हैं।

हज़रत नूह (अलैहि॰)

हज़रत आदम (अलैहि॰) के बाद हज़रत नूह (अलैहि॰) बहुत सालों तक इस दुनिया में नबी की हैसियत से रहे। जिन लोगों के साथ हज़रत नूह (अलैहि॰) रहते थे उन्होंने उनकी बात सुनने से इनकार कर दिया। जब उन्होंने कहा कि उन्हें सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और नेक काम करने चाहिएँ तो उन्होंने उनकी बातों पर कोई तवज्जोह नहीं दी। हज़रत नूह (अलैहि॰) ने समझाया कि मुझे और अल्लाह की तरफ़ से लाए हुए पैग़ाम को नज़रअन्दाज़ करने पर उन्हें बहुत सख़्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी। फिर भी लोग हज़रत नूह (अलैहि॰) की बातों पर ईमान नहीं लाए। लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया और कहा, "तुम तो बस हम जैसे एक इनसान ही हो। सिर्फ़ ग़रीब और कमज़ोर लोग ही तुम्हारी बात पर ईमान लाते हैं। अगर तुम सच्चे हो तो दिखाओ हमें वह अज़ाब जिसकी तुम हमें धमकी देते हो। तुम एक झूठे इनसान के सिवा कुछ नहीं हो!"

हज़रत नूह (अलैहि॰) ने जवाब दिया, "मैं तुमसे ईमान लाने के बदले में कुछ नहीं चाहता और न मैं कभी ग़रीब और कमज़ोर लोगों को ईमान लाने से मना कर सकता हूँ। जहाँ तक अज़ाब का सवाल है तो अल्लाह जब चाहेगा तुमपर अज़ाब ले आएगा। यह मत समझो कि तुम अल्लाह के मंसूबों को रोक सकते हो!"

हज़रत नूह (अलैहि॰) दुखी भी थे और नाराज़ भी कि लोग उनके पैग़ाम पर ध्यान नहीं देते। लेकिन अल्लाह ने हज़रत नूह (अलैहि॰) से कहा कि उन्हें इस तरह दुखी और परेशान नहीं होना चाहिए। आप इससे ज़्यादा अहम काम करने के लिए हैं। उन्हें एक बहुत बड़ी नाव बनानी है।

अल्लाह की हिदायत के मुताबिक़, हज़रत नूह (अलैहि॰) ने ज़मीन पर एक बड़ी नाव बनानी शुरू की। जिन लोगों ने ऊपर से गुज़रते हुए उसे देखा, उन्होंने उनका और उनकी नाव का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन हज़रत नूह (अलैहि॰)

ने उनको चेतावनी दी और कहा, "तुम आज हमपर हँस रहे हो, लेकिन जल्द ही पता लग जाएगा कि अल्लाह का सख़्त अज़ाब किसे भुगतना है!"

जब नाव बनकर तैयार हो गई तो न थमनेवाली बारिश शुरू हो गई और ज़मीन पर पानी भरने लगा। अल्लाह ने हज़रत नूह (अलैहि०) को हुक्म दिया कि जो ईमानवाले हैं परिवारवालों और साथियों में से उनको लेकर नाव में सवार हो जाएँ। ज़मीन पर पाए जानेवाले जानवरों में से हर एक का एक जोड़ा भी अपने साथ ले लें।

हज़रत नूह (अलैहि०) ने वैसा ही किया जैसा कि उनसे कहा गया था, फिर उन्होंने कहा, "अल्लाह के नाम से, हम पानी में चलते रहेंगे और जब सही वक़्त आएगा तो हम वापस ज़मीन पर लौट जाएँगे।"

पानी बढ़ता ही जा रहा था, यहाँ तक कि सारी घाटियाँ पानी से भर गईं। हज़रत नूह (अलैहि०) ने अपने एक बेटे को देखा जो अभी तक नाव में सवार नहीं हुआ था, उन्होंने बेचैन होकर उसे पुकारा, "ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ नाव में सवार हो जा, ताकि तू उन लोगों में से न हो जाए जो ईमान नहीं लाए।" लेकिन उनके बेटे ने उनके साथ सवार होने से इनकार कर दिया, बल्कि हज़रत नूह (अलैहि०) से कहा, "मैं अभी एक पहाड़ी पर चढ़ा जाता हूँ, वहाँ पानी मुझ तक नहीं पहुँच पाएगा।"

हज़रत नूह (अलैहि०) और ज़्यादा बेचैन हुए और कहा, "बेटा, आज सिर्फ़ उसी को पनाह मिल सकती है जो अल्लाह पर ईमान लाएगा।" उन्होंने अपने बेटे को फिर पुकारा। लेकिन तभी एक बड़ी-सी लहर आई और बहुत-से लोगों को बहाकर ले गई। हज़रत नूह (अलैहि०) का बेटा भी उनमें से एक था।

बहुत लम्बे वक़्त तक बारिश होती रही। पानी इतना भर गया कि तमाम पहाड़ डूब गए। आख़िरकार बारिश रुकी और पानी नीचे उतरा। अब हज़रत नूह (अलैहि०) की कश्ती सुरक्षित रूप से पहाड़ी पर उतर गई। सभी लोग और जानवर जो कश्ती में थे, बाहर आ गए। हज़रत नूह (अलैहि०), उनके परिवारवालों और दोस्तों ने दिल से अल्लाह का शुक्र अदा किया, क्योंकि अल्लाह ही ने उनकी हिफ़ाज़त की थी।

अध्याय-6

हज़रत हूद (अलैहि॰)

कई सौ साल पहले बहुत मेहनत और मशक़्क़त करनेवाली एक क़ौम रहा करती थी। वे आद की क़ौम के लोग थे और वे बड़े-बड़े और बहुत ख़ूबसूरत मकान बनाया करते थे। हर पहाड़ पर उन्होंने एक मीनार खड़ी की थी और उन्हें अपनी इन ख़ूबसूरत इमारतों पर बड़ा घमण्ड व अभिमान था।

आद क़ौम के लोगों में एक आदमी रहते थे जिनका नाम हूद (अलैहि॰) था। हूद (अलैहि॰) को अल्लाह ने नबी बनाने के लिए चुना। हूद (अलैहि॰) ने लोगों से कहा कि अल्लाह ने मुझे नबी बनाकर तुम्हारी तरफ़ भेजा है। जिस काम को करने में तुम माहिर हो वे सब अल्लाह ही ने तुम्हें सिखाए हैं। उसने तुम्हें औलादें दीं और बहुत-से जानवर भी। इसलिए तुम्हें झूठे ख़ुदाओं की इबादत बन्द कर देनी चाहिए। सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत करो और उसी का कहना मानो। नेक और अच्छे काम करो, बुरे और ग़लत कामों को न करो। मेरी बात को ग़ौर से सुनो, अगर तुम मेरी बात को न सुनोगे तो मुझे डर है कि कहीं तुमपर सख़्त अज़ाब न आ जाए।

लेकिन आद की क़ौम ने हूद (अलैहि॰) को कमतर समझा। वे उनका मज़ाक़ उड़ाते और कहते, "हम तुम्हारी एक न सुनेंगे। हम अपने माबूदों को तुम्हारे कहने से नहीं छोड़ेंगे। और तुम होते कौन हो हमें ऐसा कहनेवाले। तुम एक नम्बर के झूठे हो, इसके सिवा कुछ नहीं। अगर तुम झूठे नहीं हो तो अपनी सच्चाई को साबित करो। कहो अपने अल्लाह से कि भेजे वह अज़ाब जिसकी तुम हमें धमकी देते हो।"

हूद (अलैहि॰) यह सुनकर बहुत दुखी और मायूस हुए। उन्होंने समझाया कि मैं झूठा नहीं हूँ, मैं अल्लाह का नबी हूँ। क्या तुमने यह समझ रखा है कि जो मकान तुमने बनाए हैं वे हमेशा रहेंगे। याद रखो, वह अल्लाह है जिसने तुम्हें यह ख़ुशहाली दी है। वह मेरा भी ख़ुदा है और तुम्हारा भी, और उसी पर मैं ईमान लाता हूँ। मैंने पहले ही तुम्हें ख़बरदार कर दिया है

कि अगर तुम अल्लाह की फ़रमाँबरदारी नहीं करोगे तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को चुन लेगा। अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है। लेकिन हूद (अलैहि॰) के डराने के बावजूद आद के लोग अपने झूठे ख़ुदाओं की इबादत करते रहे। हज़रत हूद (अलैहि॰) बहुत मायूस और निराश हुए। उन्होंने अपने सच्चे साथियों को बुलाया और आद क़ौम को छोड़कर उनके साथ चले गए। इस तरह, जैसा कि आप बहुत जल्द देखेंगे, अल्लाह ने अपने ईमानवाले लोगों को बचा लिया।

कुछ ही देर बाद, आद क़ौम के ऊपर एक बहुत बड़ा काला बादल आसमान में छा गया। जब ख़ुदा का इनकार करनेवाले आद क़ौम के लोगों ने उसे देखा तो उन्होंने कहा कि बेशक यह बादल हमारे ऊपर ताज़ा पानी बरसाने के लिए आया है।

लेकिन वे बहुत बड़ी ग़लती पर थे। बादल एक भयानक तूफ़ान के साथ आया, जिसने सबको मौत के घाट उतार दिया। तूफ़ान ने सबका सफ़ाया कर दिया। कुछ नहीं बचा सिवाय कुछ बड़े-बड़े पत्थरों के, जो कि मकानों और इमारतों की निशानी के तौर पर रह गए थे। इसलिए बड़े-बड़े मकान और दूसरी चीज़ें बनाने से कोई फ़ायदा नहीं है। अगर कोई आदमी अल्लाह का कहना नहीं मानता है तो उसको सज़ा मिलकर रहेगी, और जो कुछ उसने बनाया है वह सब कुछ बरबाद हो जाएगा।

अध्याय-7

हज़रत सालेह (अलैहि॰)

क़ौमे-समूद जहाँ सालेह (अलैहि॰) रहते थे बड़े ख़ूबसूरत बाग़ों के मालिक थे। उनके यहाँ पानी के चश्मे, खजूर और दूसरे फलों के पेड़ पाए जाते थे, जिनपर बड़ी तादाद में फल लदे होते थे। समूद क़ौम के लोगों ने पहाड़ों और चट्टानों को काट-काटकर अपने घर बना रखे थे।

हज़रत सालेह (अलैहि॰) ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं है, इसलिए तुम्हें नेक और अच्छे काम करने चाहिएँ। मैं तुम्हें अच्छा मश्वरा दे रहा हूँ। तुम्हें मेरी बात पर ईमान लाना चाहिए, क्योंकि अल्लाह ने मुझे नबी बनाया है।

लेकिन समूद क़ौम के लोगों में सिर्फ़ वही लोग ईमान लाए जो न मालदार थे और न ताक़तवर, इन लोगों ने वही किया जो पैग़म्बर सालेह (अलैहि॰) ने उनसे करने के लिए कहा। समूद के मालदार और ताक़तवर लोगों ने कहा कि तुम जो कुछ कहते हो हम उसपर हरगिज़ ईमान नहीं लाते और न ही हम तुम्हारे मश्वरे को माननेवाले हैं। तुम हमारे ही जैसे एक इनसान हो, इसके सिवा कुछ नहीं हो। अगर तुम सच बोल रहे हो तो कोई निशानी दिखाओ।

सालेह (अलैहि॰) एक ऊँटनी लाए और उन लोगों से कहा कि ऐ लोगो! यह ऊँटनी तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ से एक निशानी है। अल्लाह की ज़मीन पर इसे चरने छोड़ दो और जब इसे प्यास लगे तो इसे पानी पीने दो। ज़रा सोचो कि अल्लाह ने तुम्हारे साथ कितना अच्छा सुलूक किया है और कैसी-कैसी नेमतें उसने तुम्हें दी हैं। तुम्हें न तो बुरे काम करने चाहिएँ और न ही ज़मीन पर फ़साद और बिगाड़ बरपा करना चाहिए। अगर तुमने ऐसा किया तो बहुत सख़्त अज़ाब तुमपर आ पड़ेगा।

सालेह (अलैहि॰) के समझाने और हिदायत देने के बावजूद समूद के घमण्डी और ताक़तवर लोग उनकी बात मानने से इनकार करते रहे। ऊँटनी को अल्लाह की ज़मीन पर चरने देने के बजाय उन्होंने उसके साथ बहुत ही बुरा सुलूक किया। उन्होंने उसकी टाँगों की कूचें काट डालीं। इस तरह उन्होंने अल्लाह की खुली नाफ़रमानी की।

उसके बाद उन्होंने सालेह (अलैहि॰) को बुलाया और कहा कि ले आ अब वह अज़ाब जिसकी तू हमें धमकी देता है, वरना हम नहीं मानेंगे कि तू अल्लाह का पैग़म्बर है।

सालेह (अलैहि॰) की तरफ़ से किया हुआ तबाही का वादा सच्चा साबित हुआ। तीन दिन के बाद एक बहुत ही भयानक भूकम्प आया और सभी बुराई करनेवाले ख़त्म हो गए। यही उनकी सज़ा थी, क्योंकि वे अल्लाह के नाफ़रमान लोगों में से थे।

अध्याय-8

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰)

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) एक महान पैग़म्बर थे। उनका बचपन ऐसे लोगों के बीच गुज़रा जो एक अल्लाह की इबादत नहीं करते थे। एक अल्लाह की इबादत के बजाय वे दूसरी चीज़ों की इबादत किया करते थे, जिनमें वे मूर्तियाँ होती थीं जिन्हें वे ख़ुद अपने हाथों से बनाते थे। एक बार हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अपने पिता से कहा, "क्या आप इन्हें ख़ुदा का दर्जा देते हैं? अगर आप ऐसा करते हैं तो आप और आपके लोग ग़लती पर हैं।"

इबराहीम (अलैहि॰) जानते थे कि मूर्तियों की पूजा करना सही नहीं है, क्योंकि यह अल्लाह की मरज़ी के ख़िलाफ़ है। अल्लाह ने इबराहीम (अलैहि॰) को और भी बहुत-सी बातें सिखाईं। जैसे कि एक दिन शाम के वक़्त इबराहीम (अलैहि॰) ने आसमान में चमकते हुए तारों को देखा तो उन्होंने कहा, "यह मेरा रब है!" लेकिन जैसे ही तारा धुँधला हुआ, यह बात इबराहीम (अलैहि॰) के ज़ेहन में साफ़ हो गई कि तारा रब नहीं हो सकता।

इसी तरह एक दूसरे मौक़े पर इबराहीम (अलैहि॰) ने रात के वक़्त आसमान में चाँद को चमकते हुए देखा। इबराहीम (अलैहि॰) ने फिर कहा कि "यह मेरा रब है!" लेकिन जैसे ही चाँद भी छुप गया तो इबराहीम (अलैहि॰) को मालूम हो गया कि चाँद ख़ुदा नहीं हो सकता।

आख़िर में, इबराहीम (अलैहि॰) ने चमकते हुए सूरज को देखा और कहा, "ज़रूर यही मेरा रब है, क्योंकि आसमान में यह सबसे बड़ा है।" लेकिन जब सूरज के डूबने का वक़्त आया तो इबराहीम (अलैहि॰) को एक बार फिर यक़ीन हो गया कि यह भी ख़ुदा नहीं है। सिर्फ़ अल्लाह ही ख़ुदा है। तब इबराहीम (अलैहि॰) ने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! एक अकेले अल्लाह को छोड़कर तुम जो दूसरे ख़ुदाओं की इबादत करते हो मैं उस गुनाह से बरी हूँ। मैं पूरी यकसूई और सच्चाई के साथ अपना रुख़ उस हस्ती की

तरफ़ करता हूँ जिसने ज़मीन और आसमानों को पैदा किया और मैं अल्लाह के सिवा कभी किसी की इबादत नहीं करूँगा।" अब इबराहीम (अलैहि॰) सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करना चाहते थे। अल्लाह वही है जिसने तमाम चीज़ों को पैदा किया, चूँकि अल्लाह ही ने तारों को, सूरज और चाँद को पैदा किया, इसलिए अल्लाह ही इस पूरी दुनिया का मालिक है।

इबराहीम (अलैहि॰) लोगों के बीच जाते थे और उनको समझाते थे कि उन्हें सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए, क्योंकि वह अल्लाह ही है जिसने तारों को, सूरज और चाँद को बनाया है। अल्लाह ग़िज़ा के तौर पर पेड़-पौधों और जानवरों को भी पैदा किया है। सूरज, चाँद और सितारे इनसान को खाने के लिए कुछ भी नहीं दे सकते। अल्लाह ने ज़मीन को बनाया है, ताकि लोग इसमें रह सकें। इसलिए लोगों को अपने झूठे ख़ुदाओं को छोड़ देना चाहिए और सिर्फ़ अल्लाह की ही इबादत करनी चाहिए और हमेशा नेक और अच्छे काम ही करने चाहिएँ।

इबराहीम (अलैहि॰) ने इन तमाम चीज़ों के बारे में बातें कीं और अपने बाप और उनके लोगों से यह भी पूछा, "इन मूर्तियों की क्या हैसियत है? जिनसे तुम लोगों को इतना लगाओ है?" उन्होंने जवाब दिया, "हमारे बाप-दादा इन्हें पूजते चले आ रहे हैं।" इबराहीम (अलैहि॰) ने उनको पलटकर जवाब दिया, "तुम और तुम्हारे बाप-दादा खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।" फिर उन्होंने लोगों को ख़बरदार किया कि वे सिर्फ़-और-सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करें जिसने हर चीज़ को पैदा किया।

इबराहीम (अलैहि॰) के दिमाग़ में मूर्तियों से निमटने का एक प्लान (योजना) भी था। जब लोग शहर से बाहर गए हुए थे तो इबराहीम (अलैहि॰) ने उनकी सभी मूर्तियों और तस्वीरों को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। लेकिन उनमें से सबसे बड़े बुत को कुछ नहीं किया और जिस कुल्हाड़ी से उन बुतों को तोड़ा था उसे बड़े बुत के कांधे पर रख दिया। जब लोगों ने आकर अपने बुतों को टूटा हुआ पाया तो उन्हें बहुत ग़ुस्सा आया। उन्होंने ग़ुस्से में आकर कहा, "हमारे बुतों के साथ यह सब किसने क़िया है?" उनमें से कुछ को याद आया कि उन्होंने इबराहीम (अलैहि॰) को इन बुतों के

ख़िलाफ़ बातें करते हुए सुना था। इसलिए उन्होंने इबराहीम (अलैहि॰) को बुलवाया और उनसे पूछा, "ऐ इबराहीम! क्या तुम ही हो जिसने हमारे बुतों के साथ यह सब किया है?" इबराहीम (अलैहि॰) ने जवाब दिया, "नहीं, इस बड़े बुत ने यह सब किया है। आप इनसे क्यों नहीं पूछते, अगर ये ठीक से बोल सकते हों?"

इसपर बुतों की पूजा करनेवालों को झिझक और शर्मिन्दगी महसूस हुई। उन्होंने इबराहीम (अलैहि॰) से कहा, "तुम अच्छी तरह जानते हो कि वे बोल नहीं सकते।" इबराहीम (अलैहि॰) ने पूछा, "तो क्या तुम ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो जो न तुम्हें फ़ायदा पहुँचा सकती हैं न नुक़सान?"

इसपर वे लोग पहले से ज़्यादा ग़ुस्से में आ गए। उन्होंने इबराहीम (अलैहि॰) को बुतों के ख़िलाफ़ बोलने की वजह से आग में फेंकने का फ़ैसला किया, लेकिन अल्लाह ने उनकी मदद की। अल्लाह ने इबराहीम (अलैहि॰) को आग से बचा लिया।

इबराहीम (अलैहि॰) ने उन लोगों का वह शहर ही छोड़ दिया और दूसरे देश चले गए। बुढ़ापे के दिनों में उनके यहाँ इसमाईल (अलैहि॰) और इसहाक़ (अलैहि॰) दो बेटे पैदा हुए। वे दोनों भी बहुत ही नेक और बुराई से पाक थे और उन दोनों को भी अल्लाह ने नबी बनाया। इसहाक़ (अलैहि॰) के बेटे याक़ूब (अलैहि॰) भी नबी थे। इस तरह आप देख सकते हैं कि इबराहीम (अलैहि॰) और उनके बच्चों को अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से बहुत कुछ नवाज़ा।

लेकिन इसके लिए पहले इबराहीम (अलैहि॰) को एक बड़े इम्तिहान से गुज़रना पड़ा। उन्होंने सपने में देखा कि वे अपने बेटे इसमाईल को ज़ब्ह कर रहे हैं। इसपर इबराहीम (अलैहि॰) बहुत दुखी हुए, लेकिन साथ-ही-साथ उनको यह भी मालूम था कि यह अल्लाह का हुक्म है और उन्हें उस हुक्म को पूरा करना है। लेकिन सबसे पहले उन्होंने अपने बेटे से पूछा कि क्या वह तैयार है! बेटा बहुत ही नेक और पाकीज़ा (पवित्र) किरदार का था। उसने अपने बाप को तसल्ली दी कि अगर यह अल्लाह का हुक्म है तो उन्हें

उसको ज़रूर मानना चाहिए और मुझे क़ुरबान कर देना चाहिए। बेटे ने कहा कि अब्बा जान आप बिलकुल न घबराएँ, अल्लाह की मेहरबानी से आप मुझे हिम्मतवाला और बहादुर पाएँगे।

इस तरह इबराहीम (अलैहि॰) अपने बेटे को क़ुरबान करने के लिए तैयार हुए। लेकिन इससे पहले कि वे ऐसा करते, उन्होंने एक आवाज़ सुनी। तुमने अपने सपने को सच्चा कर दिखाया, बस इतना ही काफ़ी है। तुमने अल्लाह की मरज़ी को पूरा कर दिया है।

इस तरह इबराहीम (अलैहि॰) का बेटा क़ुरबान होने से बच गया और इबराहीम (अलैहि॰) को भी पता चल गया कि अस्ल में अल्लाह उनका इम्तिहान ले रहा था। यक़ीनन हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को बहुत ख़ुशी हुई कि उनको अपने बेटे की क़ुरबानी नहीं देनी पड़ी। उन दोनों ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ बेटे के बजाए एक जानवर को क़ुरबान किया।

इस वाक़िए की याद में मुसलमान, इबराहीम (अलैहि॰) और उनके बेटे की तरह, एक जानवर को क़ुरबान करते हैं। यह क़ुरबानी हमें याद दिलाती है कि अल्लाह ने इबराहीम (अलैहि॰) को इम्तिहान में डाला, यह देखने के लिए कि क्या हक़ीक़त में इबराहीम (अलैहि॰) अल्लाह का हुक्म मानेंगे! हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) इस इम्तिहान में कामयाब हो गए। इसकी याद में हम बक़रा ईद या ईदुल-अज़्हा का त्योहार मनाते हैं। हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की तरह क़ुरबान किए हुए जानवर के गोश्त को हम ग़रीबों और अपने दोस्तों में बाँटते हैं और ख़ुद भी खाते हैं। इस मौक़े पर हम हर उस चीज़ के लिए अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं जो उसने हमें दी है और उस सबक़ के लिए भी जो इबराहीम (अलैहि॰) के बेटे को बचाकर उसने हमें दिया है।

बाद में, इबराहीम (अलैहि॰) और उनके बेटे इसमाईल (अलैहि॰) ने मक्का में काबा तामीर किया और उन दोनों ने अल्लाह से दुआ की, "ऐ अल्लाह, इस घर को अपनी रहमत में ले ले और हमारी और उन लोगों की

मदद कर जो सच्चे मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) बनने के लिए हमारे पास आते हैं।"

अल्लाह ने उनकी दुआ को सुन लिया और काबा और मक्का के शहर को अपनी रहमत से नवाज़ा। उस दिन से पूरी दुनिया के मुसलमान जब नमाज़ पढ़ते हैं तो वे मक्का-शहर के इसी काबे की तरफ़ रुख़ करते हैं। पूरी दुनिया से मुसलमान हज के दिनों में पैदल, ऊँटों पर, कारों और हवाई जहाज़ों में बैठकर यहाँ आते हैं। काबा ज़मीन पर अल्लाह की सबसे पुरानी इबादतगाह है। काबा वह जगह है जहाँ तमाम मुसलमान एक साथ जमा होकर अल्लाह की इबादत करते हैं, इनमें वे लोग भी शामिल हैं जो अब से पहले हो गुज़रे हैं, वे भी हैं जो इस वक़्त मौजूद हैं और वे भी हैं जो आइन्दा पैदा होंगे।

अध्याय-9

हज़रत लूत (अलैहि॰)

पैग़म्बर लूत (अलैहि॰) के समाज के लोग बहुत ही बुरे और नाफ़रमान लोगों में से थे। ये लोग बहुत-से ऐसे काम करते थे जिनसे अल्लाह ने उनको रोका था। इसलिए अल्लाह ने लूत (अलैहि॰) को उन लोगों को समझाने का हुक्म दिया कि "तुमको इन बुराइयों से रुक जाना चाहिए और अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए। अल्लाह ने मुझे तुम्हें एक सख़्त अज़ाब से डराने के लिए भेजा है जिसमें तुम सब पड़नेवाले हो, अगर तुम उसकी नाफ़रमानी करोगे।"

लेकिन लोगों ने लूत (अलैहि॰) की बात मानने से इनकार कर दिया। यहाँ तक कि वे उनका मज़ाक़ उड़ाते, क्योंकि वे उनकी बुराई में उनके साथ शरीक नहीं होते थे।

एक दिन लूत (अलैहि॰) के घर कुछ मेहमान आए। वे पापी लोग उन मेहमानों को पकड़ना चाहते और उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहते थे। लूत (अलैहि॰) बहुत घबराए कि उनमें इतनी ताक़त नहीं है कि वे अपने मेहमानों की हिफ़ाज़त कर सकते हैं। लेकिन लूत (अलैहि॰) को तसल्ली देने के लिए मेहमानों ने कहा कि तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। ये गुनहगार लोग हमें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, क्योंकि हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं। हम अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें यह बताने आए हैं कि तुम घरवालों को लेकर रात को यहाँ से निकल जाओ। तुममें से कोई मुड़कर पीछे देखने की कोशिश न करे और न ही रुके। सिर्फ़ वही लोग महफ़ूज़ रहेंगे जो बिना पीछे देखे चले जाएँगे।

हज़रत लूत (अलैहि॰) फ़ौरन समझ गए कि मेहमान हक़ीक़त में अल्लाह के फ़रिश्ते हैं। वे लूत (अलैहि॰) को और उनके घरवालों को बचाने के लिए आए हैं, क्योंकि अल्लाह उस शहर के गुनहगारों को सज़ा देने जा रहा था। लूत (अलैहि॰) और उनके घरवाले अल्लाह पर ईमान लाए थे और अल्लाह

से ही दुआ किया करते थे, इसलिए उन सबको बचाया जाना था।

हज़रत लूत (अलैहि०) और उनकी बात माननेवाले फ़ौरन ही तैयार हो गए और रात के अँधेरे में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया, ताकि कोई उन्हें देखने न पाए। लेकिन जब वे घर को छोड़ रहे थे तो लूत (अलैहि०) की बीवी उनके साथ नहीं गई और पीछे रह जानेवालों में शामिल हो गई। उसने अल्लाह पर ईमान लाने से इनकार कर दिया था और वह नाफ़रमान थी। इसलिए जब अल्लाह ने उस शहर पर आग और पत्थरों की बारिश की तो वह भी सज़ा और मौत से नहीं बच सकी। शहर में जितने घर थे वे सब तहस-नहस कर दिए गए और नाफ़रमानों को आग और पत्थर के अज़ाब ने पीसकर रख दिया।

सिर्फ़ लूत (अलैहि०) और अल्लाह पर ईमान लानेवाले लोगों को बचा लिया गया। इसपर उन लोगों ने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

अध्याय-10

हज़रत शुऐब (अलैहि०)

अल्लाह ने हर क़ौम के लिए एक नबी भेजा है। पैग़म्बर शुऐब (अलैहि०) को मदयन की ओर भेजा गया था। ये लोग, जो सौदागर और व्यापारी थे, वनवासी क़ौम कहलाते थे, क्योंकि वे एक घने जंगल के नज़दीक रहते थे।

हज़रत शुऐब (अलैहि०) ने उनसे कहा कि तुम्हें उसी एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए जिसने तुमको पैदा किया है। तुम्हें लेन-देन और कारोबार में एक-दूसरे को धोखा नहीं देना चाहिए।

लेकिन जंगलवासी क़ौम ने हज़रत शुऐब (अलैहि०) की एक न सुनी। वे ज़्यादा-से-ज़्यादा दौलत नाप-तोल में लोगों को धोखा देकर कमाना चाहते थे। इससे बढ़कर और क्या हो सकता था कि उन्होंने उन बातों पर ईमान लाने से इनकार कर दिया जो हज़रत शुऐब (अलैहि०) उनको बताते थे। जंगलवासी क़ौम ने हज़रत शुऐब (अलैहि०) को धमकी दी कि तुम हमारे शहर से निकल जाओ, वरना हम तुमपर पत्थर बरसा देंगे। तुम जो बात कह रहे हो अगर वह सच है तो वह अज़ाब हमपर बहुत पहले आ चुका होता। न हम तुम्हारी बात पर ईमान लाते हैं और न हम अल्लाह की इबादत करेंगे। हम उसके अज़ाब से नहीं डरते।

उनपर अल्लाह के अज़ाब आने में ज़्यादा देर नहीं लगी। एक दिन उनपर एक भयानक भूकम्प आया और वे सब-के-सब मर गए। जो ढेर सारी दौलत उन्होंने हासिल की थी वह भी उनके किसी काम न आई। इस तरह उनकी धोखाधड़ी पर उनको सख़्त सज़ा दी गई।

जब शहर को तबाह किया जा रहा था तो शुऐब और उनके साथियों को बचा लिया गया। जब जंगलवासी क़ौम अज़ाब में गिरफ़तार हुई तो हज़रत शुऐब (अलैहि०) ने कहा कि मैंने तुम्हें हमेशा समझाया कि अल्लाह की इबादत करो और नाप-तोल में कमी न करो। अब अल्लाह के अज़ाब का मज़ा चखो।

अध्याय-11

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰)

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के ग्यारह भाई थे। दस उनसे बड़े थे और एक उनसे छोटा। यूसुफ़ (अलैहि॰) बहुत ही नेक और ख़ूबसूरत थे और उनके पिता याक़ूब (अलैहि॰) उनसे बहुत प्यार करते थे। बदक़िस्मती से इस बात से उनके भाई उनसे जलने (ईर्ष्या करने) लगे। इसलिए उन्होंने यूसुफ़ (अलैहि॰) से छुटकारा पाने का फ़ैसला कर लिया। एक दिन वे यूसुफ़ (अलैहि॰) को एक अन्धे कुँए के पास ले गए और उसमें उन्हें फेंक दिया। फिर उन्होंने यूसुफ़ (अलैहि॰) का कुर्ता लिया और उसे भेड़ के ख़ून में भिगो लिया। उन्होंने उस कुर्ते को अपने पिता को दिखाकर कहा, "हमारे भाई यूसुफ़ मर गए, उसको एक भेड़िए ने खा लिया है।"

इस बात पर याक़ूब (अलैहि॰) को बहुत दुख हुआ और वे अपने बेटे के प्यार में फूट-फूटकर रोए। सालों गुज़र गए और अब याक़ूब (अलैहि॰) बूढ़े और अन्धे हो गए थे। लेकिन अल्लाह पर उनका यक़ीन बहुत मज़बूत और अडिग रहा। याक़ूब (अलैहि॰) अल्लाह से दुआ करते रहे और यूसुफ़ (अलैहि॰) के ज़िन्दा रहने की उम्मीद नहीं छोड़ी और उन्हें इस बात की पूरी उम्मीद थी कि वे एक बार फिर मिलेंगे। याक़ूब (अलैहि॰) को अपने अल्लाह पर पूरा यक़ीन था कि एक दिन वह उन्हें ज़रूर मिलाएगा। याक़ूब (अलैहि॰) की बात सच साबित हुई, क्योंकि जब यूसुफ़ (अलैहि॰) कुँए में थे तो उन्होंने भी अल्लाह से यही दुआ की थी। व्यापारियों का एक क़ाफ़िला कुँए के पास से गुज़रा। उन्होंने यूसुफ़ (अलैहि॰) को कुँए के अन्दर गिरा पाया, उन्होंने यूसुफ़ (अलैहि॰) को बाहर निकाला और अपने साथ मिस्र ले गए। वहाँ उन्होंने यूसुफ़ (अलैहि॰) को अच्छी क़ीमत पर एक आदमी और उसकी बीवी को बेच दिया, जिनके पास अपना कोई बच्चा नहीं था।

ज़िन्दगी में कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक आदमी पर बिला वजह ऐसे जुर्म का इलज़ाम लगया जाता है जो उसने कभी किया ही नहीं होता

है। ऐसा ही कुछ यूसुफ़ (अलैहि॰) के साथ भी हुआ जब वे जवान हुए। उनको जेल में डाल दिया गया, हालाँकि उन्होंने कोई जुर्म नहीं किया था। सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है कि इनसान के लिए क्या बेहतर है और अल्लाह उन लोगों की मदद करता है जो उसपर ईमान रखते हैं।

सालों गुज़र जाने के बाद, जब यूसुफ़ (अलैहि॰) अभी जेल ही में थे, मिस्र के बादशाह (जिसकी उपाधि अज़ीज़ थी) ने एक ख़ाब देखा जिससे वह बहुत ज़्यादा फ़िक्रमन्द और परेशान हुआ। उसने अपने दरबारियों से कहा, "मैंने देखा कि सात पतली गाएँ सात मोटी गायों को खा रही हैं और अनाज की सात बालें हरी हैं और सात बालें सूखी हैं।" लेकिन कोई दरबारी नहीं बता सका कि उसके इस ख़ाब का क्या मतलब था। तभी अज़ीज़ को पता चला कि यूसुफ़ नाम का एक आदमी जो जेल में है वह इस ख़ाब का मतलब बता सकता है। इसलिए बादशाह ने यूसुफ़ को बुलवाया और यूसुफ़ (अलैहि॰) ने बताया कि "तुम्हारे ख़ाब का मतलब है कि पहले सात साल बहुत अच्छे साल होंगे जिनमें फ़सल अच्छी होगी, लेकिन उसके बाद आनेवाले अगले सात साल बहुत ही बुरे होंगे जिसमें सूखा और भुखमरी होगी। इसलिए आपको चाहिए कि आप पहले ख़ुशहालीवाले सात सालों में ज़्यादा-से-ज़्यादा अनाज बचाकर रखें, ताकि अगले सूखे और भुखमरी के सालों में काम आ सके।

मिस्र के बादशाह ने यूसुफ़ (अलैहि॰) का शुक्र अदा किया और उनसे आनेवाली भुखमरी जैसी विपदा का सामना करने में उनकी मदद करने की दरख़ास्त की, क्योंकि बादशाह समझ गया था कि यूसुफ़ (अलैहि॰) एक अक़्लमन्द और सूझ-बूझवाले आदमी हैं। यूसुफ़ (अलैहि॰) इसके लिए तैयार हो गए और बादशाह ने उन्हें मिस्र का हाकिम मुक़र्रर करके मिस्र के ख़ज़ाने की चाबियाँ उनको सौंप दीं।

जब अकाल पड़ा और पूरे देश में फैल गया तो इससे यूसुफ़ (अलैहि॰) के घरवाले भी प्रभावित हुए। उनकी भी उन दिनों भूखों मरने की नौबत आ गई, इसलिए यूसुफ़ (अलैहि॰) के भाई मिस्र आए। वे अनाज ख़रीदना चाहते थे जिसे यूसुफ़ (अलैहि॰) ने मिस्र के लोगों से जमा करने के लिए कहा था।

यह अल्लाह का प्लान था कि जब वे मिस्र पहुँचे तो भाई यूसुफ़ (अलैहि॰) के सामने आ गए। पहले तो वे यूसुफ़ (अलैहि॰) को पहचान नहीं पाए, क्योंकि उन्होंने सोचा कि यूसुफ़ (अलैहि॰) को तो मरे हुए भी बहुत दिन हो गए। बाद में वे पहचान गए कि यूसुफ़ (अलैहि॰) उनके भाई थे, फिर जो कुछ उन्होंने कई साल पहले यूसुफ़ (अलैहि॰) के साथ किया उसपर वे बहुत शर्मिन्दा हुए। उन्होंने यूसुफ़ (अलैहि॰) से माफ़ी माँगी और यूसुफ़ (अलैहि॰) ने उन्हें माफ़ कर दिया। फिर युसूफ़ ने अपने भाइयों से अपने बाप को लाने के लिए कहा।

जब भाई अपने बूढ़े अन्धे बाप याक़ूब (अलैहि॰) को लेकर यूसुफ़ (अलैहि॰) के पास आए तो वे बहुत ख़ुश हुए। उन्हें हमेशा इस बात का यक़ीन था कि यूसुफ़ (अलैहि॰) ज़िन्दा हैं, इसलिए उन्होंने अल्लाह से दुआ करनी कभी बन्द नहीं की थी। बाप और बेटे ने एक-दूसरे को गले से लगाया। काफ़ी वक़्त दूर रहने के बाद दोबारा मिलना उनके लिए बहुत ही अद्‌भुत था।

यूसुफ़ (अलैहि॰) के पिता और सब भाई मिस्र ही में रह गए। फिर उनका परिवार बहुत बढ़ गया और उनसे बहुत-से बच्चे हुए। हज़रत मूसा (अलैहि॰) की कहानी में आपको मालूम होगा कि ये बच्चे आगे चलकर क्या बने।

यूसुफ़ (अलैहि॰) ने, जो कि बहुत ही नेक, महान इनसान और अल्लाह के पैग़म्बर थे, मिस्र के लोगों से हमेशा कहा कि तुम सबको एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए। अल्लाह ही ने तुम सबको पैदा किया है और तुम्हें रोज़ी दी। तुम सबको अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और नेक काम करने चाहिएँ।

हज़रत मूसा (अलैहि॰)

मिस्र की सरज़मीन पर, जहाँ पर इबराहीम, याक़ूब और यूसुफ़ (अलैहि॰) की औलादें रहा करती थीं, एक ज़ालिम और दुष्ट फ़िरऔन (राजा) था। एक दिन उस दुष्ट फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ (अलैहि॰) की नस्ल के जितने बच्चे हैं उन सबको क़त्ल कर दिया जाए। उसने यह हुक्म इसलिए दिया कि वह यह नहीं चाहता था कि यूसुफ़ (अलैहि॰) की नस्ल के लोगों की तादाद बढ़े और वे उसकी क़ौम से ज़्यादा ताक़तवर हो जाएँ।

ख़तरों से भरे इसी दौर में मूसा (अलैहि॰) पैदा हुए। अल्लाह ने उनकी माँ के दिमाग़ में डाला कि वह नन्हे मूसा (अलैहि॰) को एक टोकरी में रखे और उस टोकरी को दरिया में छोड़ दे। इस तरीक़े से मूसा (अलैहि॰) उस भयानक अंजाम से बच जाएँगे जिसका फ़िरऔन ने हुक्म दे रखा था।

छोटे बच्चे की उस टोकरी को फ़िरऔन की पत्नी ने उठा लिया। वह बहुत रहमदिल और नेक-दिल औरत थीं। वे मूसा (अलैहि॰) को अपने महल में ले गईं। कोई नहीं जानता था कि उस बच्चे के माँ-बाप कौन हैं, लेकिन फ़िरऔन की पत्नी उस बच्चे को अपने पास रखना चाहती थीं, इसलिए उन्हें किसी ऐसी माँ की तलाश थी जो उसकी माँ की तरह निगरानी कर सके। इस तरह अल्लाह ने मूसा (अलैहि॰) की अस्ली माँ को उसके अपने बच्चे तक पहुँचाने का ज़रिआ बना दिया, ताकि उसको एक दाया के तौर पर महल में रखा जा सके। इस तरह नन्हे मूसा की ज़िन्दगी बच गई और अल्लाह की मदद से वे वापस अपनी माँ के पास पहुँच गए।

मूसा (अलैहि॰) की परवरिश फ़िरऔन के महल में होने लगी और बेहतरीन अध्यापकों को उनकी शिक्षा के लिए बुलाया गया। उन्होंने मूसा (अलैहि॰) को एक क़ाबिल, समझदार और सलाहियतवाला आदमी बना दिया।

जैसे ही मूसा (अलैहि॰) बड़े हुए, उन्हें किसी वजह से फ़िरऔन के मुल्क को छोड़ना पड़ा। रास्ते में उनका गुज़र एक कुँए पर से हुआ, जहाँ कुछ चरवाहे अपनी भेड़ों को पानी पिला रहे थे। मूसा (अलैहि॰) ने देखा कि वहाँ दो औरतें और खड़ी हैं, जो अपनी भेड़ों को भी पानी पिलाना चाहती हैं। लेकिन वे पानी तक नहीं पहुँच सकती थीं जब तक कि वे चरवाहे अपनी भेड़ों के पूरे झुंड को पानी पिलाकर चले न जाएँ। मूसा (अलैहि॰) ने उन औरतों की उनके जानवरों को पानी पिलाने में मदद की। जब वे दोनों औरतें अपने घर को वापस लौटीं तो उन्होंने कुँए पर जो कुछ हुआ था वह सब अपने बाप से बता दिया। बाप ने उनमें से एक को मूसा (अलैहि॰) को घर पर बुलाकर लाने के लिए भेजा। बाद में उनके बाप ने मूसा (अलैहि॰) से अपनी एक बेटी से शादी कर लेने की पेशकश की, जिसे मूसा (अलैहि॰) ने क़बूल कर लिया। उसके बाद मूसा (अलैहि॰) खुशी-खुशी अपनी बीवी और उनके बूढ़े बाप के साथ वहाँ ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

कुछ सालों बाद, मूसा (अलैहि॰) जब अपने परिवार को लेकर वापस अपने शहर जा रहे थे तो अचानक उन्होंने एक बड़ी-सी आग देखी। उन्होंने अपने बीवी-बच्चों से वहीं ठहरने के लिए कहा और उस आग का पता लगाने अकेले चले गए। जब मूसा (अलैहि॰) उस आग के पास पहुँचे तो उन्होंने एक आवाज़ सुनी, "ऐ मूसा! मैं अल्लाह हूँ तुम्हारा रब। मैं तुम्हें अपना नबी बनाने जा रहा हूँ। तुम्हें लोगों के पास जाना है और उनको बताना है कि सिर्फ़ एक अकेला अल्लाह ही सबका रब है, जिसने उन सबको पैदा किया है। इसलिए उन्हें उसका शुक्र अदा करना चाहिए और उसी से दुआएँ करनी चाहिएँ और नेक अमल करने की कोशिश करते रहना चाहिए। अपने भाई हारून को साथ ले लो और फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ और उन्हें मेरा पैग़ाम पहुँचाओ।"

मूसा (अलैहि॰) ने मिस्र पहुँचकर फ़िरऔन से कहा, "सारी दुनिया के मालिक अल्लाह ने मुझे तेरे पास भेजा है। मैं अल्लाह का नबी हूँ और मैं तुम्हारी तरफ़ सच्चाई लेकर आया हूँ। तू यूसुफ़ (अलैहि॰) की नस्ल के लोगों को आज़ाद कर और मेरे साथ जाने दे, क्योंकि इनपर इस ज़मीन पर ज़ुल्म

ढाया जा रहा है।"

जब फ़िरऔन ने यह सुना तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया और चिल्लाने लगा, "तुम झूठे हो! मैं मिस्र का महान शासक हूँ, मेरे सिवा दुनिया का कोई मालिक नहीं है। मैं ज़मीन पर सबसे ताक़तवर बादशाह हूँ। ज़रूर तुम पागल हो गए हो तभी यह बात कहने की हिम्मत की। अगर तुमने मेरी बात न मानी तो मैं तुम्हें क़ैद में डाल दूँगा।"

लेकिन मूसा (अलैहि॰) फ़िरऔन की बातों और उसके ग़ुस्से से बिलकुल भी न डरे। मूसा (अलैहि॰) ने फ़िरऔन से कहा कि "अल्लाह की मदद से मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि अल्लाह तमाम इनसानों से ज़्यादा ताक़तवर है, तुझसे भी ज़्यादा ताक़तवर।" फिर मूसा (अलैहि॰) ने अपनी लाठी ली और ज़मीन पर फेंकी। फ़ौरन वह लाठी लम्बा, मोटा और लहराता हुआ साँप बन गई।

फ़िरऔन ने जब यह देखा तो फ़ौरन बोला, "तू यक़ीनन एक माहिर जादूगर है। मैं अभी अपने मुल्क के तमाम जादूगरों को बुलाता हूँ और फिर देखता हूँ कि कौन बेहतर जादू के करतब दिखाता है, वे जादूगर, या तू।"

इसलिए तमाम जादूगरों को बुलाया गया। उनके हाथों में बहुत-सी लाठियाँ थीं और उन्होंने उन सबको साँप बना दिया। लेकिन जैसे ही मूसा (अलैहि॰) ने अपनी लाठी को ज़मीन पर फेंका वह लाठी फिर से साँप बन गई। यह साँप उन तमाम साँपों को निगल गया, जो उन जादूगरों ने बनाए थे।

जादूगर बहुत प्रभावित हुए। वे पुकार उठे, "हम सच्चे दिल से अल्लाह पर ईमान लाते हैं जिसने मूसा (अलैहि॰) को अपना पैग़म्बर बनाकर भेजा। अल्लाह हक़ीक़त में हम सबसे बहुत ज़्यादा ताक़तवर है।"

फ़िरऔन को बहुत ग़ुस्सा आया। उसने चिल्लाते हुए कहा, "क्या तुम मेरे इजाज़त देने से पहले ही इस बात पर ईमान लाते हो? तुम्हारी सज़ा यह है कि तुम्हारे हाथ और पाँव काट दिए जाएँ।"

जादूगरों ने जवाब दिया, "क्या तुम हमसे सिर्फ़ इसलिए बदला लेना चाहते हो कि हम अल्लाह की निशानियों को देखकर ईमान ले आए? अब

तुम जो चाहो हमारे साथ करो, हमने अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ कर लिया है। अल्लाह हमपर अपनी रहमत नाज़िल करे और हमारे क़दम जमाए रखने में हमारी मदद करे!" इस तरह जादूगर, जो कि लालची लोग थे, एक अच्छे इनसान और अल्लाह के वफ़ादार बन्दे बन गए।

अब मूसा (अलैहि॰) यूसुफ़ (अलैहि॰) की क़ौम के पास पहुँचे जो फ़िरऔन के ज़ुल्म की चक्की में पिस रहे थे। उन्होंने उनसे कहा, "हमें मिस्र से निकल जाना होगा।" लेकिन जैसे ही वे निकले फ़िरऔन की सेना उनको वापस लाने के लिए उनका पीछा करने लगी।

मूसा (अलैहि॰) और उनकी क़ौम के लोग तेज़ी से आगे बढ़ते रहे यहाँ तक कि वे दरिया तक पहुँच गए। जब तक फ़िरऔन की सेना उनका पीछा करती रही मूसा (अलैहि॰) के साथी भयभीत रहे। लेकिन अल्लाह ने उनकी मदद की। अल्लाह ने दरिया के पानी को दो हिस्सों में बाँट दिया, ताकि मूसा (अलैहि॰) और उनके साथी दरिया को पार करने के लिए उसमें चल सकें। जब फ़िरऔन और उसकी सेना दरिया पर पहुँचे तो, वे भी उसी जगह से दरिया को पार करने लगे। लेकिन वे मूसा (अलैहि॰) को न पकड़ सके, क्योंकि मूसा (अलैहि॰) और उनके लोग फ़िरऔन की क़ौम के आने से पहले दरिया पार कर चुके थे। अभी फ़िरऔन और उसकी सेना के लोग बीच दरिया ही में थे कि दोनों तरफ़ के पानी मिल गए और वे सब-के-सब डूब गए। इस तरह अल्लाह ने मूसा (अलैहि॰) और उनके लोगों को बचा लिया, क्योंकि वे एक अल्लाह की इबादत किया करते थे। फ़िरऔन, जिसने अल्लाह पर ईमान लाने से इनकार कर दिया था और घमंड करता था और मूसा (अलैहि॰) को क़ैद में डालना चाहता था, डूबकर मर गया।

फ़िरऔन से नजात पाने के बाद मूसा (अलैहि॰) और उनके साथी कई सालों तक रेगिस्तान में भटकते रहे। एक दिन मूसा (अलैहि॰) को अल्लाह की तरफ़ से पहाड़ी पर आने का हुक्म मिला। मूसा (अलैहि॰) को वहाँ इबादत करने और अल्लाह के वे अहकाम सुनने के लिए जो उनके और उनके साथियों के लिए थे, 40 दिन-रात तक रहना था। 40 दिन-रात का समय उन लोगों को काफ़ी लम्बा महसूस हुआ और मूसा (अलैहि॰) के लोगों

के पास न रहने से उनके अन्दर बहुत-सी बुराइयाँ आने लगीं। उन्होंने सोने का एक बछड़ा बनाने और उसकी पूजा करने का फ़ैसला किया। जब मूसा (अलैहि॰) पहाड़ी से वापस आए और बछड़े को देखा तो उन्हें बहुत ग़ुस्सा आया। उन्होंने बछड़े को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और अपनी क़ौम के लोगों को फिटकार लगाई कि उन्हें अपने-आपपर शर्म आनी चाहिए। मूसा (अलैहि॰) ने उनसे कहा, "तुम्हें एक अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत हरगिज़ नहीं करनी चाहिए।"

मूसा (अलैहि॰) अपनी क़ौम के लिए एक किताब लेकर आए। जब वे पहाड़ी पर थे तब यह किताब अल्लाह ने उनपर नाज़िल की थी। इस किताब को तौरात कहा जाता है। तौरात में लिखा है कि आदमी को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। उन्हें अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत हरगिज़ नहीं करनी चाहिए। उन्हें अपने साथी की हत्या कभी नहीं करनी चाहिए। जो चीज़ उनकी न हो वह चीज़ उनको नहीं लेनी चाहिए। अपने माँ-बाप और दूसरे के साथ नेक सुलूक करना चाहिए।

मूसा (अलैहि॰) की क़ौम समझ गई कि वे अल्लाह के बड़े नाशुक्रे हो गए थे, क्योंकि वह अल्लाह ही था जिसने फ़िरऔन और उसकी सेना से नजात दिलाई थी। फिर उन्होंने अल्लाह से दुआ की और उसका शुक्र अदा किया उस मेहरबानी के लिए जो उसने उनके लिए की थी। उन्होंने अल्लाह से माफ़ी माँगी और वादा किया कि अब वे नेक काम करने में सख़्त मेहनत करेंगे।

अल्लाह उन सब लोगों को माफ़ कर देता है जो अपने किए हुए गुनाहों पर शर्मिन्दा होते हैं और अपनी ग़लतियों को सुधारकर अपने अल्लाह की तरफ़ पलटना चाहते हैं।

अध्याय-13

हज़रत यूनुस (अलैहि॰)

हज़रत यूनुस (अलैहि॰) को अल्लाह ने एक ऐसे शहर में नबी बनाकर भेजा था जहाँ के लोग अल्लाह के हुक्मों (आदेशों) को भूल चुके थे और ऐसे-ऐसे काम करने लगे थे जिनको करने से अल्लाह ने रोका था। हज़रत यूनुस (अलैहि॰) ने उनको समझाया, "तुम्हें अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए और उसी का हुक्म मानना चाहिए। तुम्हें उसी एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और नेक काम करने चाहिएँ वरना एक सख़्त अज़ाब तुमपर आ जाएगा।"

लेकिन हज़रत यूनुस (अलैहि॰) को जल्द ही मालूम हो गया कि लोग उनकी बात मानना ही नहीं चाहते थे। उन्होंने सब्र से काम न लिया और उनपर ग़ुस्सा होकर शहर छोड़ दिया। फिर हज़रत यूनुस (अलैहि॰) ने दरिया पार जाने का फ़ैसला किया और सफ़र के लिए कश्ती में सवार हो गए। लेकिन जब कश्ती दरिया के बीच में पहुँची तो यूनुस (अलैहि॰) को एक बड़े ही दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। उनको कश्ती से दरिया में फेंक दिया गया और एक बड़ी सी मछली ने उनको निगल लिया। ख़ुशकिस्मती से मछली के उन्हें निगल जाने के बावजूद उन्हें मछली के पेट में कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

मछली के पेट के अन्दर बहुत अँधेरा था, और यूनुस (अलैहि॰) बहुत घबरा गए थे। अपने अकेलेपन में उन्होंने सोचना शुरू किया कि शहर में क्या कुछ हुआ था। फिर उनको समझ में आया कि उनको शहर छोड़ने में इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिए थी। इसके बजाय उन्हें वहाँ और ठहरना चाहिए था, लोगों को समझाना चाहिए था कि वे अल्लाह की तरफ़ पलटें।

इसी मायूसी की हालत में हज़रत यूनुस (अलैहि॰) ने दिल से अल्लाह तआला से दुआ करनी शुरू की। उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं है, तमाम तारीफ़ें और इज़्ज़त तेरे ही लिए हैं। मुझसे ग़लती हो

गई; अगर तू मेरी मदद नहीं करेगा तो मैं हमेशा के लिए घाटे में पड़ जाऊँगा।"

अल्लाह उन लोगों की दुआओं को सुनता है जो उससे दुआएँ करते हैं और उसपर ईमान लाते हैं। अल्लाह ने हज़रत यूनुस (अलैहि०) की दुआ सुन ली और मछली के पेट से बाहर निकालकर लहरों के ज़रिए से किनारे पर पहुँचा दिया। अब बेचारे हज़रत यूनुस (अलैहि०) परेशानी, कमज़ोरी, बीमारी और लाचारी की हालत में किनारे पर पड़े थे। उनको बहुत ही कमज़ोरी महसूस हो रही थी, तब अल्लाह ने वहाँ एक पेड़ उगाकर बड़ा किया और फिर इस पेड़ पर फल आए जिन्हें हज़रत यूनुस (अलैहि०) ने खाकर ताक़त हासिल की और उसके साए में आराम किया। बहुत ही जल्द हज़रत यूनुस (अलैहि०) ठीक हो गए और उनके अन्दर ताक़त आ गई।

जब वे ठीक हो गए तो अल्लाह ने यूनुस (अलैहि०) को वापस शहर भेजा। इस बार लोगों ने उनकी बातों को सुना। उन्होंने लोगों को समझाया, "तुम्हें सिर्फ़ एक अल्लाह पर यक़ीन और उसी की इबादत करनी चाहिए। तुम्हें अच्छे काम करने चाहिएँ।"

अध्याय-14

हज़रत दाऊद (अलैहि॰)

जब दाऊद (अलैहि॰) बच्चे थे तो वे भेड़ और बकरियाँ चराया करते थे। वे बहुत ही ताक़तवर और बहादुर थे। एक बार बहुत ही वहशी और बर्बर फ़ौज के एक गरोह ने उनके लोगों पर हमला कर दिया। उनमें से एक का नाम जालूत था। जालूत के नाम से हर कोई थर-थर काँपता था। दाऊद (अलैहि॰) के सिवा किसी ने उससे लड़ने की हिम्मत नहीं की। दाऊद (अलैहि॰) ने जालूत को लड़ने के लिए ललकारा और मार गिराया। इससे दुश्मनों में ऐसी दहशत फैली कि सब-के-सब दुम दबाकर भाग खड़े हुए। हज़रत दाऊद (अलैहि॰) वास्तव में बहुत बहादुर थे लेकिन जालूत से जीत दिलाने में अल्लाह ने उनकी मदद की थी। अल्लाह ने दाऊद (अलैहि॰) को सूझ-बूझ, ताक़त और क़ाबिलियत भी दी थी। दाऊद (अलैहि॰) बहुत ही माहिर लोहार थे और लोहे से हथियार और कवच जैसी बहुत-सी ज़बरदस्त चीज़ें बनाते थे।

दाऊद (अलैहि॰) बहुत अच्छा गाते भी थे। उन्होंने अल्लाह की तारीफ़ और बड़ाई में गीत गाए। ये गीत, जिसे दाऊद (अलैहि॰) ने फ़रिश्तों से सीखा था, ज़बूर नाम की किताब में लिख गए थे। इस ज़बूर किताब को अल्लाह ने दाऊद (अलैहि॰) पर उतारा था, बिलकुल उसी तरह जिस तरह उसने मूसा (अलैहि॰) पर तौरात उतारी थी।

अल्लाह ने दाऊद (अलैहि॰) को नबी बनाया था और अपनी क़ौम पर बादशाह। वे बहुत ही इनसाफ़-पसन्द बादशाह थे और उनकी प्रजा के लोग जब आपस में झगड़ते तो वे हमेशा दाऊद (अलैहि॰) के पास आते। एक बार की बात है कि एक आदमी की कुछ भेड़ें रात के वक़्त चरती हुई किसी दूसरे आदमी के खेत में घुस गईं और तमाम फ़सल को खा गईं। दाऊद (अलैहि॰) ने भेड़ के मालिक को सज़ा के तौर पर हुक्म दिया कि भेड़ें खेत के उस मालिक को दे दी जाएँ जिसकी सारी फ़सल बरबाद हो गई थी। जब दाऊद

(अलैहि॰) के बेटे सुलैमान ने सुना तो उन्होंने विरोध किया कि खेत तो अभी भी वहीं है, यह तो केवल इस साल की फ़सल थी जो ख़त्म हो गई है। इसलिए तमाम भेड़ें पूरे तौर पर खेत के मालिक को नहीं दी जानी चाहिएँ। मालिक को वे सारी भेड़ें उस वक़्त वापस करनी चाहिएँ जब वह अपने खेत के हुए नुक़सान की भरपाई कर ले।

दाऊद (अलैहि॰) ने अपने बेटे सुलैमान के इस अच्छे सुझाव को पसन्द किया और फ़ैसला किया कि वे सुलैमान के मश्वरों के मुताबिक़ ही मामले को सुलझाएँगे।

अगली कहानी में आप सुलैमान (अलैहि॰) के बारे में सुनेंगे कि उन्हें भी अल्लाह ने अपनी पैग़म्बरी के लिए चुन लिया था।

दाऊद (अलैहि॰), जो कि अल्लाह के नबी थे, हमेशा अपनी क़ौम से कहते थे, "तुम्हें एक अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए और उसी एक अकेले ख़ुदा की इबादत करनी चाहिए।"

अध्याय-15

हज़रत सुलैमान (अलैहि॰)

हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) हज़रत दाऊद (अलैहि॰) के बेटे थे। जैसा कि आप पहले से ही जानते हैं कि सुलैमान (अलैहि॰) बचपन से ही इनसाफ़-पसन्द थे। बचपन से ही वे अपनी अक़्लमन्दी के लिए जाने जाते थे और इसी लिए उनकी बहुत इज़्ज़त की जाती थी। जब वे बड़े हुए तो अल्लाह ने उन्हें अपना नबी बना लिया। अल्लाह ने उन्हें जानवरों और पक्षियों की बोलियाँ भी सिखाईं। बहुत ज़्यादा अक़्लमन्द और दौलतमन्द होने के बावजूद वे कभी अल्लाह को नहीं भूले। वे जानते थे कि तमाम भलाइयाँ अल्लाह की तरफ़ से ही आती हैं। इसलिए वे हमेशा लोगों को कहते कि "जो भलाई और सख़ावत (Generosity) अल्लाह ने आप लोगों को दी है उसके लिए उसका शुक्र अदा करो। उसी एक अल्लाह की इबादत करो और नेक काम करो।"

एक बार सुलैमान (अलैहि॰) और उनकी फ़ौज एक घाटी से गुज़र रहे थे जिसमें चींटियाँ रहती थीं। सुलैमान (अलैहि॰) ने सुना कि एक चींटी दूसरी चींटी से कह रही है, "जल्दी करो, रास्ते से हट जाओ और छिप जाओ! सुलैमान और उनकी फ़ौज आ रही है वे हमको रौंद डालेंगे और उनको पता भी नहीं चलेगा कि उन्होंने ऐसा किया है।"

सुलैमान (अलैहि॰) चूँकि चींटियों की बोली समझते थे। वे हँसे और अपनी फ़ौज को रुक जाने का हुक्म दिया जब तक कि सभी चींटियाँ रेंगते हुए महफ़ूज़ जगह पर नहीं पहुँच गईं। फिर उन्होंने अल्लाह से दुआ की, "ऐ अल्लाह! सही काम करने में मेरी मदद कर, ताकि तू मुझसे राज़ी हो जाए।"

एक दिन सुलैमान (अलैहि॰) ने तमाम पक्षियों को अपने पास बुलाया, लेकिन जब उन्होंने सबपर नज़र डाली तो देखा कि उनमें हुदहुद नहीं है। सुलैमान (अलैहि॰) ने कुछ देर इन्तिज़ार किया, फिर जैसे ही इन्तिज़ार न करने का फ़ैसला किया, हुदहुद अचानक उड़कर वहाँ पहुँच गया और सुलैमान

(अलैहि॰) के क़रीब जाकर बैठ गया। हुदहुद ने कहा कि मैं दूर एक सबा नामक शहर से आया हूँ। वहाँ के लोग बहुत मालदार हैं और उनकी रानी बहुत ही शानदार तख़्त पर बैठती है। वहाँ के लोग अल्लाह को छोड़कर सूरज की पूजा करते हैं और सूरज को ख़ुदा मानना सही समझते हैं। लेकिन वे ग़लत करते हैं। क्या यह ग़लत नहीं है? अगर वे ऐसा ही करते रहे तो उन्हें अल्लाह का सीधा रास्ता कभी नहीं मिल सकेगा। एक अकेला अल्लाह ही है जिसकी तमाम मख़लूक़ को इबादत करनी चाहिए।

तभी सुलैमान ने सबा की रानी को एक ख़त लिखा और हुदहुद को हुक्म दिया कि इस ख़त को उसके पास पहुँचाए।

जब सबा की रानी को ख़त मिला तो उसने दरबार के सभी समझदार और बुद्धिमान लोगों को अपने पास बुलवाया और कहा, "मुझे सुलैमान की तरफ़ से एक ख़त मिला है। इसमें सुलैमान ने लिखा है कि हमें एक अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए और उसी की इबादत करनी चाहिए। तुम्हारा क्या मश्वरा है कि मुझे क्या करना चाहिए?"

उन लोगों ने कहा, "हम बहुत ताक़तवर लोग हैं, हम सुलैमान से जंग कर सकते हैं। अब आप फ़ैसला कीजिए कि आपको क्या करना है।"

लेकिन रानी ने बहुत ही समझदारी की बात कही कि जंग से हमारा शहर बरबाद हो सकता है और हमारे अच्छे फ़ौजी ख़ूँख़ार लड़ाके बन जाएँगे। इसलिए हमें जंग न करने को तरजीह देनी चाहिए। इसके बजाय हम सुलैमान को तोहफ़ा भेजेंगे।

जब सबा की रानी का दूत तोहफ़ा लेकर सुलैमान (अलैहि॰) के पास पहुँचा तो उन्हें बड़ी हैरत हुई, क्योंकि सुलैमान (अलैहि॰) ग़ुस्से में थे। सुलैमान (अलैहि॰) ने डाँटते हुए कहा, "तुम मेरी बात मानने के बजाय ये सब क्यों लेकर आए हो? जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह इस माल से बेहतर है जो तुम लाए हो। अपनी रानी के पास वापस जाओ और तोहफ़े को भी अपने साथ ले जाओ।"

सबा की रानी को इस बात पर बड़ी हैरानी हुई कि सुलैमान (अलैहि॰)

ने उसके क़ीमती तोहफ़ों को लेने से इनकार कर दिया है। इसलिए उसने सुलैमान (अलैहि०) से खुद मिलने का फ़ैसला किया। उसने अपने लोगों को बुलवाया और सुलैमान (अलैहि०) के शहर जाने की तैयारी का हुक्म दिया।

जब रानी वहाँ पहुँची तो सुलैमान (अलैहि०) ने उसे अल्लाह के बारे में तफ़सील से बताया। अब उसे मालूम हुआ कि वह सूरज की पूजा करके कितनी बड़ी ग़लती कर रही थी। उसने सुलैमान (अलैहि०) से कहा, "आप बिलकुल ठीक कहते हैं। आज से मैं एक अल्लाह की इबादत किया करूँगी। वही हमारा रब है और हमें उसी का हुक्म मानना चाहिए।"

अध्याय-16

हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया (अलैहि०)

हज़रत ज़करिया (अलैहि०) और उनकी बीवी दोनों बूढ़े थे, मगर उनको दुख इस बात का था कि अभी तक उनके यहाँ कोई औलाद नहीं थी। वे एक बेटा चाहते थे, इसलिए हज़रत ज़करिया (अलैहि०) ने अल्लाह से दुआ की, "ऐ अल्लाह! मरने से पहले हमें एक बेटा अता कर दे।"

जब हज़रत ज़करिया (अलैहि०) यह दुआ कर रहे थे तो एक फ़रिश्ता आया और उसने उनसे कहा, "तुमने जो अल्लाह से दुआ की है उसने उसे सुन लिया है। तुम्हारी बीवी के यहाँ एक बच्चा पैदा होगा जिसका नाम यहया होगा। वह बहुत ही अच्छा और बाइज़्ज़त आदमी होगा और वह अल्लाह का नबी होगा।"

हालाँकि ज़करिया (अलैहि०) ने ही दुआ की थी, लेकिन उन्हें हैरत हुई और उन्होंने कहा, "मैं और मेरी बीवी तो बूढ़े-बाँझ हो चुके हैं, हमारे यहाँ बेटा कैसे पैदा हो सकता है?"

फ़रिश्ते ने उन्हें यक़ीन दिलाया कि जब अल्लाह किसी बात का इरादा कर लेता है तो वह हो जाती है। तुम्हारे यहाँ बेटा होगा। इसकी निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक किसी से बात न कर सकोगे।

और ऐसा हुआ भी कि जब भी ज़करिया (अलैहि०) किसी से बात करना चाहते तो उनकी ज़बान हिलती ही नहीं थी। तीन दिनों के बाद वे फिर से बात करने के क़ाबिल हुए। अब वे जान गए थे कि उनके यहाँ बच्चा पैदा होनेवाला है। वे और उनकी बीवी दोनों बहुत ख़ुश थे। उन्होंने अल्लाह से दुआ की और उसका शुक्र अदा किया, और जब उनके यहाँ बेटा पैदा हो गया तो उन्होंने उसका नाम यहया रखा।

यहया (अलैहि॰) बहुत ही अच्छे और प्यारे बेटे थे। उन्होंने अपने बाप ज़करिया और अपनी माँ के साथ मिलकर दुआ की। वे तीनों हमेशा अच्छे काम ही किया करते थे। यहया (अलैहि॰) तमाम लोगों और जानवरों के लिए बहुत मेहरबान और अच्छे थे। वे न कभी घमंड करते थे और न उन्हें कभी ग़ुस्सा आता था। अल्लाह ने उन्हें अपना नबी बनाया। यहया (अलैहि॰) बहुत ही पाक और अल्लाह के नेक बन्दे थे और वे लोगों से हमेशा कहा करते, "एक अल्लाह की इबादत करो, क्योंकि अल्लाह ही ने इनसान को पैदा किया है।"

यहया (अलैहि॰) पर अल्लाह की मेहरबानी का क़ुरआन में भी ज़िक्र है। अल्लाह फ़रमाता है–

> "सलाम (शान्ति) उसपर जिस दिन कि वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरे और जिस दिन वह ज़िन्दा करके उठाया जाए।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-19 मरयम, आयत-15)

हज़रत यहया (अलैहि॰) की तरह जो कोई भी नेक और पाक होगा अल्लाह उसे हमेशा की सलामती अता करेगा।

अध्याय-17

हज़रत ईसा (अलैहि०)

हज़रत ईसा (अलैहि०) की माँ का नाम मरयम था। कुछ लोग उन्हें 'मैरी' भी कहते हैं। वे बहुत ही नेक और परहेज़गार औरत थीं। एक बार अल्लाह का एक फ़रिश्ता उनके पास आया और उसने कहा, "जल्दी ही तुम्हारे यहाँ एक बच्चा पैदा होगा।" मरयम ने कहा, "मेरे यहाँ बच्चा कैसे पैदा हो सकता है, जबकि मेरी तो अभी शादी भी नहीं हुई है।" फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "अल्लाह बहुत क़ुदरतवाला है। जब वह किसी काम को करने का इरादा करता है तो वह हो जाता है। इसलिए तुम्हारे यहाँ एक बेटा होगा और उसका नाम ईसा (अलैहि०) होगा और वह अल्लाह का एक महान पैग़म्बर होगा।

जब ईसा (अलैहि०) पैदा हुए तो मरयम अकेली थीं। वे बहुत दुखी थीं और भूखी भी, क्योंकि उनके यहाँ खाने को कुछ भी नहीं था। लेकिन अल्लाह ने उनकी मदद की। उसने वहाँ पर पानी निकाला और वहीं पर फलों से लदा हुआ एक पेड़ उगाया। अब उन्हें भूख और प्यास की कोई परेशानी नहीं थी।

बाद में मरयम अपने घर को लौट आईं। वे बच्चे के बारे में बहुत परेशान थीं कि लोग जब बच्चे के बारे में पूछेंगे तो वे क्या जवाब देंगी।

जब लोगों ने बच्चे के बारे में पूछा तो मरयम ने कोई जवाब नहीं दिया, बस बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया। लोगों ने यह देखकर कहा, "मरयम हमें बेवक़ूफ़ न बनाओ। हम इस बच्चे से क्या पूछ सकते हैं, जबकि यह अभी पालने ही में है?"

लेकिन तभी एक चौंका देनेवाली बात हुई। उन्होंने सुना कि बच्चा बोल रहा है। बच्चा कह रहा था, "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी है और मुझे अपना नबी बनाया है। हम तमाम लोगों को उसी एक

अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और ग़रीबों की मदद करनी चाहिए और उन्हें अपने माल में से कुछ ज़रूर देना चाहिए।

दिन गुज़रते गए और ईसा (अलैहि॰) बड़े हुए। अकसर वे लोगों को वे बातें बताया करते जो उनपर नाज़िल हुआ करती थीं। वे अपने से पहले गुज़रे हुए नबियों के बारे में भी लोगों को बताया करते। वे लोगों से कहते, "मैं भी अल्लाह का पैग़म्बर हूँ और मैं भी दूसरे पैग़म्बरों की तरह एक इनसान हूँ।" तुम्हें अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए और अल्लाह के सिवा किसी की भी इबादत नहीं करनी चाहिए। तुम्हें एक-दूसरे के लिए अच्छा बनना चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए।

कुछ लोग ईसा (अलैहि॰) को जीसस भी कहते हैं। वे कहते हैं कि अल्लाह ईसा (अलैहि॰) के बाप हैं। हम जानते हैं कि यह बात सही नहीं है। हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने ख़ुद कहा था कि वे सिर्फ़ अल्लाह के नबी हैं, हालाँकि वे बिना बाप के थे। अल्लाह का कोई बेटा नहीं है। सिर्फ़ इनसान के यहाँ ही बेटे-बेटियाँ होते हैं।

हज़रत ईसा (अलैहि॰) इनसानों के लिए एक किताब लेकर आए। इस किताब को 'इंजील' कहते हैं, अल्लाह ने ईसा (अलैहि॰) को यह किताब लोगों की हिदायत के लिए दी। इस किताब में बहुत-सी कहानियाँ हैं और यह भी लिखा है कि तमाम इनसानों को एक ही अल्लाह की इबादत करनी चाहिए।

पैग़म्बर ईसा (अलैहि॰) को अल्लाह की तरफ़ से बहुत-सी नेमतें अता की गई थीं। वे अल्लाह की मदद से बहुत-से चमत्कार करने की सलाहियत रखते थे। वे बीमारों को ठीक कर दिया करते थे, ताकि वे अल्लाह का शुक्र अदा करनेवाले हों और उसी की इबादत करने लगें। हज़रत ईसा (अलैहि॰) मुर्दा को भी ज़िन्दा कर देते थे, ताकि लोग ख़ुश हो जाएँ और अल्लाह से दुआ करें और उसका शुक्र अदा करें।

पैग़म्बर ईसा (अलैहि॰) ने लोगों को यह भी बताया कि उनके चले जाने के बाद एक और नबी आएगा जिसका नाम अहमद होगा। वह अल्लाह ही

है जिसने हज़रत ईसा (अलैहि॰) को नबी बनाकर भेजा, यह बताने के लिए कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) आनेवाले हैं।

बहुत-से लोग थे जिन्होंने हज़रत ईसा (अलैहि॰) की बात को सुना और एक अल्लाह की इबादत करने लगे, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने उनकी बात का इनकार कर दिया और उनको मारने पर तुल गए। बुरे लोगों ने हमेशा अल्लाह के नबियों को सताने और मार डालने की कोशिश की है। इस सिलसिले में हम हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) और हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) और बहुत-से नबियों के क़िस्से सुन चुके हैं।

लेकिन जब बुरे लोगों ने ईसा (अलैहि॰) को मारने की कोशिश की तो अल्लाह ने उन्हें दूसरे नबियों की तरह ख़तरे से बचा लिया।

कुछ लोगों का कहना है कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) को दुश्मनों ने सलीब पर लटका दिया था और इस तरह वे मर गए। लेकिन हम जानते हैं कि यह बात सही नहीं है। अल्लाह ने पैग़म्बर ईसा (अलैहि॰) को बचा लिया था और बुरे लोगों के इरादों को पूरा न होने दिया। अल्लाह ने हज़रत ईसा (अलैहि॰) से फ़रमाया, "मौत के वक़्त तुमपर मेरी तरफ़ से सलामती होगी और फिर तुम मेरे पास आओगे और मेरे साथ होगे। वे लोग जिन्होंने तुम्हारी बात मानी होगी और मेरी इबादत की होगी और अच्छे काम किए होंगे वे सब भी मेरी तरफ़ लौटाए जाएँगे। उन सबको मेरी तरफ़ से बेहतरीन इनाम मिलेंगे, क्योंकि वे बहुत-ही फ़रमाँबरदार होंगे।

इस तरह अल्लाह अपने नबियों की मदद करता है जब वे ख़तरे में होते हैं और उन लोगों की भी मदद करता है जो नबियों की बात मानते हैं और अल्लाह की इबादत करते हैं और नेक काम करते हैं।

अध्याय-18

आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)

प्यारे नबी मुहम्मद (सल्ल॰) का नाम तो आप पहले सुन चुके हैं। आदम (अलैहि॰) पहले नबी थे और मुहम्मद (सल्ल॰) आख़िरी। अल्लाह ने मुहम्मद (सल्ल॰) को एक किताब दी, जिसको क़ुरआन कहा जाता है। नबियों के वे सारे क़िस्से जो इस किताब में तुमने पढ़े हैं, वे सब इसी क़ुरआन में मौजूद हैं। क़ुरआन में यह भी लिखा है कि तुम्हें क्या करना चाहिए और तुम्हें क्या नहीं करना चाहिए।

मुहम्मद (सल्ल॰) आख़िरी नबी थे, इसी वजह से अल्लाह ने उन्हें क़ुरआन दिया। अल्लाह के बारे में हम जो कुछ भी जानना चाहते हैं वे सब-के-सब जवाब क़ुरआन में मौजूद हैं। हर शख़्स क़ुरआन के ज़रिए से पता लगा सकता है कि उसे क्या करना चाहिए। इसलिए मुहम्मद (सल्ल॰) के बाद किसी दूसरे नबी की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही।

दूसरे नबियों की तरह मुहम्मद (सल्ल॰) ने भी लोगों को बताया कि तुम्हें सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए। अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया, उसी ने पेड़-पौधे उगाए और जानवर पैदा किए, ताकि वे तुम्हारे काम आ सकें। उसने ज़मीन, आसमान, पानी, हवा, रात और दिन को तुम्हारे लिए बनाया। इसलिए तुम्हें उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए और नेक काम करने चाहिएँ।

अब तुम कई नबियों के बारे में जान चुके हो। लेकिन याद रहे कि इन नबियों के अलावा और भी बहुत-से नबी हैं, क्योंकि अल्लाह ने तमाम क़ौमों के लोगों के लिए नबी भेजे थे। तुमने इस बात पर भी ग़ौर किया होगा कि सभी नबी एक ही बात कहते रहे हैं, "ऐ लोगो! एक ही अल्लाह की इबादत करो।" पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने हमें सिखाया कि हमें किस तरह अल्लाह

की इबादत करनी चाहिए। तुम भी इसको याद कर सकते हो, यह कोई मुश्किल काम नहीं है।

कुछ दूसरी चीज़ें ऐसी भी हैं जो हमें करनी चाहिएँ। हमें एक अल्लाह पर ईमान लाना चाहिए, नमाज़ें पढ़नी चाहिएँ, रोज़े रखने चाहिएँ, ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों को ज़कात देनी चाहिए और ज़िन्दगी में एक बार मक्का हज करने के लिए जाना चाहिए, मदीना की ज़्यारत भी करनी चाहिए। अगर हम उसका ख़र्च बरदाश्त कर सकते हों।

इस किताब में और भी बहुत-सी दूसरी बातें आप सीखेंगे।

अध्याय-19

क़ियामत और फ़ैसले का दिन

जैसा कि आप जानते हैं कि अल्लाह ने तमाम लोगों के पास अपने पैग़म्बर भेजे। इन नबियों ने लोगों को बताया कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। नबियों ने और भी बहुत-सी बातें बताईं। उन्होंने बताया कि जब हम मर जाएँगे तो हमें दफ़न कर दिया जाएगा, लेकिन अल्लाह सबसे बड़ा और सर्वशक्तिमान है। वह हमें मारने के बाद फिर से ज़िन्दा करेगा। यह सब क़ियामत के दिन होगा। उस दिन हममें से हर एक को अल्लाह के सामने जमा किया जाएगा। हम में से वे लोग जिन्होंने अच्छे काम किए होंगे हमेशा जन्नत में रहेंगे। लेकिन जिन्होंने बुरे काम किए होंगे और तौबा नहीं की होगी या अल्लाह से माफ़ी नहीं माँगी होगी, उनको जन्नत में नहीं रहने दिया जाएगा। उनका ठिकाना जहन्नम होगा। यह है फ़ैसले का दिन। नेकी के काम करने का मतलब है कि नबियों की बातों को मानना और उनके मुताबिक़ अल्लाह के हुक्म की पाबन्दी करना। इस तरीक़े से कोई भी शख़्स मरने के बाद हमेशा अल्लाह के साथ रह सकता है। बुराई के काम करने का मतलब है अल्लाह के नबियों की बात न मानना और अल्लाह की नाफ़रमानी करना। इसलिए जो लोग बुराई करेंगे, मरने के बाद जन्नत में नहीं रह सकेंगे।

अब आप कह सकते हैं कि हर कोई नेकी करना क्यों नहीं चाहता? तो इसकी वजह यह है कि कुछ लोग सोचते हैं कि उनका नबियों की बात सुनना कोई ज़रूरी नहीं है। लेकिन ऐसा सोचना ग़लत है। नबियों ने लोगों को बताया है कि उन्हें क्या करना चाहिए। हम जब तक ज़िन्दा हैं अच्छे काम करते रहना चाहिए। अच्छे काम करने से दूसरी चीज़ों के मुक़ाबले में ख़ुशियाँ ज़्यादा मिलती हैं। हमें अच्छे लोगों को दोस्त बनाना चाहिए। हमारे दोस्त अगर अच्छे हैं तो ये दुनिया में भी हमारे साथ रहेंगे और मरने के बाद भी।

जिन लोगों ने बुरे काम किए होंगे वे बुरे लोगों के साथ ही रहेंगे। उनके बहुत-से दुश्मन होंगे। उनके दुश्मन इस दुनिया में भी होंगे और मरने के बाद की ज़िन्दगी में भी।

अल्लाह के पैग़म्बर और अल्लाह की इबादत करनेवाले लोग हमारे दोस्त हैं। बुरे काम करनेवाले और अल्लाह का इनकार करनेवाले हमारे दोस्त नहीं हैं।

अध्याय-20

हमारे अक़ीदे

हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं, जो सिर्फ़ एक और सबसे बड़ा है, जो हमारा बनानेवाला भी है और मालिक भी। उसी पर हम भरोसा करते हैं और सिर्फ़ उसी से डरते हैं।

हम फ़रिश्तों पर ईमान लाते हैं जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया। हम उन्हें जानते हैं हालाँकि वे हमें दिखते नहीं हैं। वे अल्लाह के बड़े ही फ़रमाँबरदार बन्दे हैं और वे हर वक़्त उसके हुक्म को पूरा करने में ही लगे रहते हैं।

हम इस बात पर भी ईमान लाते हैं कि वे बातें जो अल्लाह की तरफ़ से नबियों पर नाज़िल हुई थीं, वे किताबों में लिख ली गई हैं। अल्लाह की तरफ़ से सबसे आख़िर में दी जानेवाली किताब क़ुरआन है, जो मुहम्मद (सल्ल॰) पर नाज़िल हुई। सिर्फ़ क़ुरआन ही अकेली वह किताब है जो अपनी अस्ली हालत में ज्यों-की-त्यों महफ़ूज़ है।

हम ईमान रखते हैं कि अल्लाह ने तमाम इनसानों के लिए पैग़म्बर भेजे, इस पैग़ाम के साथ पैग़म्बर भेजे कि सिर्फ़ और सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करो और नेक काम करो।

हम ईमान लाते हैं क़ियामत के दिन पर, जबकि अल्लाह मौत के बाद हम सबको उठा खड़ा करेगा। जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए होंगे और नेक काम किए होंगे उनको इनाम दिया जाएगा और जो लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाए होंगे और उन्होंने बुरे काम किए होंगे उनको सज़ा दी जाएगी।

हम ईमान रखते हैं कि अल्लाह ने हमको अच्छाई और बुराई की समझ दी है, ताकि हम अच्छे काम कर सकें और बुराई के ख़िलाफ़ खड़े हो सकें।

भाग-2

इस्लाम

भाग-2

इस्लाम

अध्याय-1

कलिमा-ए-शहादत

हसन और सलमा भाई-बहन हैं। उन्होंने बड़े लोगों को पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) और इस्लाम के बारे में अकसर बातें करते सुना है। उन्होंने उन्हें ये बातें करते भी सुना, "हम मुस्लिम हैं।" इस बात ने बच्चों को बेचैन कर दिया। एक बार हसन ने अपने अब्बू से पूछ ही लिया, "जब आप कहते हैं कि हम मुस्लिम हैं तो इसका क्या मतलब है?"

उसके अब्बू ने जवाब दिया, "इसका मतलब है अल्लाह की बातों को मानना, उन बातों को जिन्हें जिबरील (अलैहि॰) मुहम्मद (सल्ल॰) के पास अल्लाह के हुक्म से लाते थे और जो क़ुरआन में लिखी गई हैं।"

हसन और सलमा ने क़ुरआन और जिबरील (अलैहि॰) के बारे में पहले ही कुछ-न-कुछ सुन रखा था।

सलमा ने पूछा, "इस्लाम क्या है?"

उसके अब्बू ने जवाब दिया "इस्लाम हमारा ईमान है। अगर एक मुसलमान इस्लाम पर अमल करना चाहता है तो उसे पाँच चीज़ें करनी होती हैं–

पहली चीज़ तो यह कि उसे कलिमा-ए-शहादत (नहीं है कोई माबूद सिवाय अल्लाह के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।) कहना होगा।

दूसरी चीज़ यह कि उसे दिन में पाँच वक़्तों की नमाज़ें अदा करनी होंगी।

तीसरी चीज़ यह कि उसे रमज़ान में पूरे महीने के रोज़े रखने होंगे।

चौथी चीज़ यह कि उसे ग़रीबों को ज़कात देनी होगी।

पाँचवी चीज़ यह कि जब उसके पास इतने पैसे जमा हो जाएँ कि वह सफ़र का ख़र्च उठा सके तो हज करने के लिए मक्का जाए।

यह सुनकर हसन और सलमा ने कहा, "ये तो बहुत सारे काम हैं करने के लिए!"

उनके अब्बू ने कहा, "ठीक है, तुम्हें ये सारी बातें एक साथ याद करने की ज़रूरत नहीं हैं। अगर हर दिन कुछ वक़्त इसको सीखने में लगाओ तो इन पाँच कामों को दूसरे अच्छे मुस्लिम लोगों की तरह तुम दोनों भी आसानी से कर सकोगे। कलिमा-ए-शहादत अदा करना, रोज़ाना पाँच वक़्त नमाज़ अदा करना, रमज़ान के रोज़े रखना, ज़कात देना और ज़िन्दगी में कम-से-कम एक बार मक्का हज करने के लिए जाना।

हसन ने परेशान होकर कहा, "अभी भी मुझे कुछ बातें समझ में नहीं आई हैं। यह कलिमा-ए-शहादत क्या है?"

अब्बू मुस्कुराए और हसन से बोले, "परेशान न हो, कुछ बातें ऐसी हैं जिनको तुम अभी नहीं समझते, लेकिन बहुत ही जल्द तुम दोनों उनको समझने लगोगे। आज हम कलिमा-ए-शहादत से ही शुरू करते हैं।" यह कहकर अब्बू ने कहा, "अब मेरे साथ-साथ पढ़ो, अश-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह।"

हसन ने अपने अब्बू के साथ-साथ इसको दोहराया—"अश-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह।"

सलमा ने ज़ोर से कहा, "यह तो मुझे भी आता है : अश-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह।"

"बहुत ख़ूब" अब्बू ने कहा, "लेकिन तुम्हें इसका मतलब भी मालूम होना चाहिए। इसका मतलब है कि मैं गवाही देता या देती हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (मालिक और परवरदिगार) नहीं है। अश-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह जब तुम यह कहते हो तो तुम कलिमा-ए-शहादत अदा कर रहे हो। हम मुसलमान यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि एक अल्लाह ही सबका रब है और यह भी कि उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह अल्लाह ही है जिसने हमें और इस पूरी दुनिया को बनाया। दुनिया में मौजूद हर चीज़ को अल्लाह ही ने पैदा किया। जब हम ला इला-ह इल्लल्लाह कहते हैं तो

इसका यही मतलब होता है। इन अरबी के शब्दों का मतलब यह है कि "अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा (इबादत के लाइक़) नहीं है।" इस कलिमे को पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने हमें अरबी भाषा में सिखाया है।

हसन ने कहा, "यह कोई मुश्किल नहीं है।"

अब्बू ने कहा, "यक़ीनन यह मुश्किल नहीं है, लेकिन बात यहीं ख़त्म नहीं हुई है। यह कलिमा-ए-शहादत का सिर्फ़ पहला हिस्सा है।"

"इसका दूसरा हिस्सा किस तरह है?" सलमा ने जल्दी से पूछा।

अब्बू ने बहुत धीरे से कहा, "व अश्-हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह।"

सलमा ने कहा, "प्लीज़ हमें दोनों हिस्सों को एक साथ मिलाकर फिर से बताइए।"

अब्बू ने मुस्कुराकर कहा, "अश-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह व अश-हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह।"

पहले सलमा ने कोशिश की। "अश.......अश........अश......" लेकिन यहीं अटककर रह गई और आगे बढ़ ही न सकी।

हसन ने ज़ोर से कहा, "अश्-हदु!"

सलमा ने फ़ौरन कहना शुरू कर दिया "अश-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह व अश्-हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह।"

"बिलकुल सही!" अब्बू ने कहा, "हसन, अब तुम्हारी बारी है!"

हसन ने बिना कोई ग़लती किए कलिमा-ए-शहादत सुनाया।

"अब तुम्हें इसका मतलब भी मालूम होना चाहिए। इसका मतलब है, "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।"

अध्याय-2

नमाज़ के लिए वुज़ू

एक बार सलमा ने अपनी अम्मी से पूछा, "लोगों को कैसे पता चला कि उन्हें नमाज़ किस तरह पढ़नी चाहिए?"

उनकी अम्मी ने बताया, "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने लोगों को नमाज़ पढ़कर दिखाई और बताया था।"

सलमा ने कहा, "मैं भी नमाज़ पढ़ना चाहती हूँ, क्या आप मुझे बताएँगी कि मैं कैसे नमाज़ पढ़ूँ?"

उसकी अम्मी ने कहा, "हाँ-हाँ बिलकुल, मैं बताऊँगी। मैं तुम्हें यह भी बताऊँगी कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने लोगों को नमाज़ पढ़कर किस तरह दिखाया। तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि नमाज़ किस तरह अदा की जाती है। सभी मुस्लिम एक ही तरह से नमाज़ पढ़ते हैं, बिलकुल उसी तरह से जिस तरह मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया था कि वे एक ही तरीक़े से और एक ही वक़्त में एक साथ नमाज़ अदा करें। वरना हर आदमी बिलकुल अलग तरीक़े से नमाज़ पढ़ा करता। हम नमाज़ अरबी में पढ़ते हैं, ताकि हर एक आदमी अल्लाह से वही बात कहे जो सब कहते हैं, अलग-अलग कोई बात न हो। हम एक साथ नमाज़ अदा करना चाहते हों, लेकिन कोई अरबी में पढ़े, कोई उर्दू में और कोई अंग्रेज़ी में तो यह मुमकिन नहीं है। इसलिए हम सब अरबी में नमाज़ पढ़ते हैं, जिस तरह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने हमें हिदायत की है।"

सलमा की अम्मी ने आगे कहा, "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया कि नमाज़ से पहले हमें वुज़ू कर लेना चाहिए, ताकि हम पाक हो जाएँ। यह बिलकुल उसी तरह है जिस तरह हम अपने-आपको साफ़ पानी से पाक करते हैं। हमें साफ़ और पाक पानी की तरह अपने ख़यालात और विचारों को भी पाक-साफ़ कर लेना चाहिए। नमाज़ के वक़्त नापाक रहना बिलकुल भी

अच्छा नहीं है।

अम्मी ने कहा, "अब मैं तुम्हें बताती हूँ कि वुज़ू कैसे करते हैं? सबसे पहले पानी से अपने हाथों को धोते हैं, फिर अपने मुँह और नाक को साफ़ करते हैं और फिर चेहरे को धोते हैं। फिर अपने हाथ कुहनियों तक धोते हैं, पहले दाएँ हाथ को फिर बाएँ हाथ को। ये सारे काम तीन-तीन बार करते हैं जब यह सब हो जाए तो फिर अपने गीले हाथों को सिर पर घुमाते हैं। सबसे आख़िर में पैरों को धोते हैं। पहले दाँया पैर तीन बार उसके बाद बाँया पैर तीन बार। पैरों को धोना बहुत ज़रूरी है। अब हम पाक हैं और नमाज़ के लिए तैयार हैं।"

"यह तो वाक़ई बहुत आसान है।" सलमा ने कहा, "पहले अपने हाथ धोने हैं, फिर मुँह और नाक तीन-तीन बार साफ़ करनी है। उसके बाद अपना चेहरा धोना है और फिर........" इतना कहकर सलमा रुक गई। उसको याद नहीं आ रहा था कि आगे क्या करना है। वह मायूस-सी दिखने लगी, लेकिन उसकी अम्मी मुस्कुराईं और उसको बताया कि "कोई बात नहीं, तुमको यह क़रीब-क़रीब आ ही गया है। चेहरे के बाद कुहनियों तक तीन-तीन बार हाथ धोने हैं। अब यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि पहले कौन-सा हाथ धोना है।"

सलमा ने कहा, "मुझे मालूम है, पहले दायाँ, फिर बाँया। उसके बाद अपने गीले हाथों को अपने सिर पर घुमाना है और बालों को ऊपर से भिगोना है। सबसे आख़िर में पैर धोने हैं, पहले दाँया फिर बाँया। फिर मैं नमाज़ के लिए पाक हूँ।"

फिर सलमा ने पूछा, "नमाज़ में क्या पढ़ते हैं? मैंने अभी यह तो सीखा ही नहीं है।"

अम्मी ने कहा, "नहीं, आज इसकी ज़रूरत नहीं है। पहले वुज़ू करना सीखना ज़रूरी है। मेरा ख़याल है कि आज के लिए इतना काफ़ी है। कल मैं तुम्हें दिखाऊँगी कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने हमें नमाज़ पढ़ना किस तरह सिखाया है।"

अध्याय-3

नमाज़-1

"कल, तुमने सीखा कि नमाज़ से पहले वुज़ू कैसे किया जाता है," सलमा की माँ ने उससे कहा। "आज मैं तुम्हें दिखाऊँगी और बताऊँगी कि नमाज़ कैसे पढ़ी जाती है। लेकिन शुरू करने से पहले, मुझे दिखाओ कि वुज़ू कैसे करते हैं। तुम्हें अभी तक याद है न?"

सलमा ने कहा, "हाँ, मुझे बिलकुल याद है।" और फिर उसने अपनी अम्मी को दिखाना शुरू कर दिया कि वुज़ू कैसे किया जाता है।

उसकी अम्मी बहुत खुश हुईं और बोलीं, "शाबाश!, तुमने तो वुज़ू करना बहुत ही जल्दी सीख लिया।"

अपनी अम्मी के शाबाशी देने पर सलमा बहुत खुश हुई। फिर अम्मी ने समझाना शुरू किया, "पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा कि जब हम जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहे हों तो एक सफ़ में सीधे खड़े होना चाहिए। हमें इस तरह खड़े होना चाहिए कि हमारा रुख़ मक्का की तरफ़ हो।

सलमा ने पूछा, "हमें ऐसा करना क्यों ज़रूरी है?"

"क्योंकि काबा मक्का में है।" अम्मी ने जवाब दिया, "तुम्हें मालूम है न कि काबा अल्लाह की सबसे पुरानी इबादतगाह है। मुहम्मद (सल्ल॰) के ज़रिए अल्लाह ने हमें यह बताया है कि नमाज़ के वक़्त हमें अपना रुख़ काबा की तरफ़ करना चाहिए। यही हमारा क़िबला है, जिसकी तरफ़ रुख़ करके हम नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ में हर मुसलमान का रुख़ अलग होने से बेहतर है कि उनका रुख़ एक ही तरफ़ हो। है न !

सलमा ने कहा, "अरे हाँ, बिलकुल। लेकिन मुझे कुछ और भी बताइए। मैं जानना चाहती हूँ कि काबा की तरफ़ रुख़ कैसे करते हैं?"

"हाँ-हाँ बाबा! जल्दी मत करो," अम्मी ने कहा। "तुम्हें बहुत अच्छी तरह ध्यान से देखना है, ताकि तुम याद रख सको। नमाज़ के लिए खड़े होने

और काबा की तरफ़ रुख़ कर लेने के बाद हमें ख़ामोशी से एक ही जगह ध्यान लगाना है। मन-ही-मन में हम अपने-आपको इबादत के लिए यकसू कर लेते हैं और अल्लाह से दुआ करते हैं कि सही तरीक़े से इबादत करने में हमारी मदद कर। उसके बाद हम अपने हाथों को अपने कानों तक उठाते हैं और कहते हैं—

الله اكبر

अल्लाहु-अकबर।"

"इसका मतलब होता है कि अल्लाह ही बड़ा है।"

सलमा ने बीच में बोलते हुए कहा। "मुझे यह पहले ही से आता है।"

अम्मी ने हाँ में सिर हिलाया और बोलीं, "अब हम दाँया हाथ बाँए हाथ के ऊपर रखकर हाथ बाँधते हैं और सूरा फ़ातिहा पढ़ते हैं।"

"मुझे यह पहले से ही याद है, मैं सुनाऊँ?" सलमा ने बेक़रार होकर पूछा।

अम्मी ने कहा, "हाँ, लेकिन याद रहे कि क़िबले की तरफ़ रुख़ करना है और इसे ठीक से पढ़ना है।"

सलमा ने अपने हाथ उठाए और कहा, "अल्लाहु-अकबर।"

फिर उसने अपना दाँया हाथ बाँए हाथ पर रखा और सूरा फ़ातिहा पढ़नी शुरू की—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ①

अल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल-आ-लमीन।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ②

अर्रहमानिर्रहीम।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣﴾

मालिकी यौमिद्दीन।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾

इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तईन।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾

इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

सिरातल-लज़ी-न अनअम-त अलैहिम।

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

ग़ैरिल-मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन। आमीन!

यह सुनकर अम्मी ने सलमा से कहा, "बहुत ख़ूब, सलमा!" सलमा बहुत ख़ुश हुई। सलमा नमाज़ सीखने के लिए बहुत बेक़रार थी और इसमें उसे बहुत मज़ा आ रहा था, क्योंकि उसमें से कुछ चीज़ें उसे पहले ही से याद थीं।

"आगे और क्या करना है?" सलमा जानना चाहती थी।

अम्मी ने कहा, "इसी तरह खड़ी रहो और कोई दूसरी छोटी-सी सूरा पढ़ो। तुम सूरा जानती हो ना? अगर नहीं जानतीं हो तो मैं बताए देती हूँ। सूरा क़ुरआन का एक हिस्सा है, और क़ुरआन एक ऐसी किताब है जिसे अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर नाज़िल किया था। क्या तुम्हें कोई छोटी सूरा आती है?

सलमा ने कहा, "हाँ, सूरा इख़लास आती है ना!"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

कुल हुवल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

लम यलिद व लम यूलद, व लम यकुल्लहू कुफ़ूवन अहद।

"बहुत ख़ूब!" अम्मी ने कहा, "तुम्हें तो पहले ही से दो सूरतें ज़बानी याद हैं।"

"मुझे एक और भी आती है।" सलमा ने कहा, "इन्ना अअ्तैना कल-कौसर.........."

अम्मी मुस्कुराईं और कहने लगीं, "अभी रुको! जल्दी न करो! तुम इसे बाद में पढ़ना।"

फिर अम्मी ने बताना शुरू किया कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया है कि सूरा फ़ातिहा के बाद हमें कोई दूसरी सूरा पढ़नी चाहिए। फिर हमें झुकना (रुकूअ करना) चाहिए और तीन बार ये तसबीह पढ़नी चाहिए—

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِيْمِ ۝

सुब्हा-न रब्बीयल-अज़ीम।

सलमा ने पूछा, "इसका मतलब क्या होता है?"

अम्मी ने कहा, "इसका मतलब है कि सारी बड़ाई और तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो बड़ी शानवाला है।"

"इसका मतलब है कि मेरा सबसे बड़ा रब अल्लाह है।" सलमा यह कहकर झुक गई और तीन बार दोहराया—

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِيْمِ ۝

सुब्हा-न रब्बीयल-अज़ीम।

अम्मी ने आगे बताया, "फिर हम सीधे खड़े होते हैं और कहते हैं—

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ ۝

समि-अल्लाहुलिमन हमिदूह

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ ۝

रब्बना व लकल हम्द

इसका मतलब होता है कि अल्लाह उन लोगों की सुनता है जो उसकी तारीफ़ करते हैं। ऐ हमारे रब हम तेरी तारीफ़ करते हैं।

सलमा ने वे अलफ़ाज़ फिर से दोहराए—

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ ۝

"समीअल्लाहुलिमन हमिदूह

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ ۝

रब्बना व लकल-हम्द

"फिर हम 'अल्लाहु-अकबर' कहकर सजदे में चले जाते हैं।"

नमाज़ के बारे में जैसे-जैसे अम्मी बता रही थीं वैसे-वैसे सलमा करती जा रही थी और जो कुछ वे कह रहीं थीं उसपर पूरा ध्यान दे रही थी।

अम्मी ने सलमा से कहा, "अब हम अपने माथे को ज़मीन पर रखते (सजदा करना) हैं और तीन बार कहते हैं—

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى ۝

'सुब्हा-न रब्बियल-आला।'

फिर हम 'अल्लाहु-अकबर' कहते हैं और बैठ जाते हैं। उसके बाद फिर अल्लाहु-अकबर कहते हैं और सजदा करते हैं। यानी दो बार सजदा करते हैं।

हम सजदे में तीन बार फिर दोहराते हैं 'सुब्हा-न रब्बियल-आला।'

फिर अल्लाहु-अकबर कहते हुए हम सीधे खड़े हो जाते हैं।"

सलमा ने कहा, "लेकिन आपने अभी तक यह तो बताया ही नहीं कि सुब्हा-न रब्बियल-आला का मतलब क्या होता है।"

उसकी अम्मी ने बताया, "इसका मतलब होता है, पाक है मेरा रब जो बहुत बुलन्द और ऊँचा है।" सलमा की अम्मी बहुत ख़ुश थीं। क्योंकि उन्हें मालूम हो गया था कि सलमा नमाज़ सीखने के लिए पूरा ध्यान लगा रही थी।

"बहुत ख़ूब!" अम्मी ने तारीफ़ करते हुए कहा, "तुमने बहुत अच्छे तरीक़े से सीखा है। हम कुछ और बार इसकी प्रैक्टिस करेंगे जब तक कि तुम्हें अच्छी तरह याद न हो जाए, लेकिन आज हमने काफ़ी कर लिया है। तुम बहुत ध्यान लगा रही हो और सख़्त मेहनत कर रही हो, मुझे तुमपर नाज़ है। अब इससे आगे हम कल जानेंगे और जल्दी ही तुम इस लायक़ हो जाओगी कि बड़ों की तरह नमाज़ पढ़ सको।"

सलमा भी बहुत ख़ुश थी कि उसने सबकुछ अच्छी तरह से किया। बिस्तर पर जाने से पहले उसने नमाज़ में पढ़े जानेवाले लफ़्ज़ों को याद करने की कोशिश की : सुब्हा-न रब्बियल-अज़ीम। इसका मतलब है कि पाक है मेरा रब जो बहुत बड़ी शानवाला है। समिअल्लाहु-लिमन हमिदूह। इसका मतलब है कि अल्लाह सुनता है उसकी जो उसकी तारीफ़ करता है और सुब्हा-न रब्बियल-आला, इसका मतलब होता है कि पाक है मेरा रब जो बहुत बुलन्द और ऊँचा है।

चूँकि सलमा ने बहुत मेहनत से बहुत कुछ सीख लिया था और अब वह थक गई थी, इसलिए जल्द ही वह गहरी नींद सो गई।

नमाज़-2

अगले दिन अम्मी ने सलमा से कहा कि नमाज़ के दूसरे हिस्से को सीखने का वक़्त हो गया है। लेकिन शुरू करने से पहले अम्मी ने कहा, "जो कुछ पहले सीख चुकी हो उसको दोहराओ।"

सलमा सीधे खड़ी हुई और बोली, "सबसे पहले मुझें क़िबला की तरफ़ रुख़ करके खड़े होना चाहिए।"

अम्मी ने कहा, "बिलकुल ठीक! लेकिन क्या तुम वुज़ू करना भूल तो नहीं गईं या तुमने पहले से ही किया हुआ है?"

"ओह प्यारी अम्मी!" सलमा ने कहा, "मैं भूल गई।"

सलमा तेज़ी से दौड़कर बाथरूम गई और जिस तरह अम्मी ने बताया था उसी तरह वुज़ू किया। यानी उसने अपने हाथ धोए, फिर मुँह, नाक, चेहरा और बाहें धोईं, पहले दाएँ, फिर बाएँ। और फिर अपनी उँगलियों से सिर के ऊपरी हिस्से को भिगोया यानी मसह किया। जब यह सबकुछ हो चुका तो सबसे बाद में टख़नों तक पैर धोए, पहले दायाँ फिर बायाँ। जब सलमा ये सब कर रही थी तो उसने मन-ही-मन में कहा, "मैं नमाज़ से पहले वुज़ू करना बिलकुल भूल गई थी, जबकि मैं जानती हूँ कि यह बहुत ज़रूरी है। नमाज़ के लिए सफ़ाई का होना बहुत ज़रूरी है। मैं आगे से इसे नहीं भूलूँगी।"

फिर वह जल्दी से वापस आई और अम्मी के पीछे जानमाज़ पर खड़ी हो गई। सलमा ने अपने आप को नमाज़ के लिए यकसू किया और अपना रुख़ क़िबले की तरफ़ कर लिया। उसने अपने दोनों हाथ कानों तक उठाए और कहा, 'अल्लाहु-अकबर', फिर उसने अपने दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखा और सूरा फ़ातिहा पढ़कर नमाज़ शुरू की। फिर उसने एक छोटी सूरा इख़लास पढ़ी। फिर उसने 'अल्लाहु-अकबर' कहा और अपने हाथों को

घुटनों पर रखा और तीन बार पढ़ा—सुब्हा-न रब्बियल-अज़ीम। फिर वह सीधी खड़ी हो गई और कहा "समिअल्लाहु लिमन हमिदह, रब्ब-ना व लकल हम्द" फिर वह 'अल्लाहु-अकबर' कहते हुए सजदे में चली गई, ज़मीन पर सजदा करते हुए उसने तीन बार सुब्हा-न रब्बियल-आला पढ़ा और उसके बाद फिर उसने 'अल्लाहु अकबर' कहा और बैठ गई। "अल्लाहु-अकबर" कहते हुए वह फिर सजदे में चली गई और तीन बार सुब्हा-न रब्बियल-आला" पढ़ा।

नमाज़ में सलमा कभी-कभी अटक जाती और लड़खड़ा जाती, लेकिन उसकी अम्मी उसे याद दिला देती थीं और इस तरह सबकुछ ठीक चलता रहा।

अब उसकी अम्मी ने कहा, "यहाँ तक तुमने एक रकअत पूरी कर ली, तुम्हें इसी तरह सूरा फ़ातिहा से शुरू करके दूसरी रकअत भी पूरी करनी है।

सलमा ने कहा, "क्या सूरा फातिहा के बाद फिर सूरा इख़लास पढ़नी है?"

उसकी अम्मी ने कहा, "बेहतर तो यह है कि कोई दूसरी सूरा पढ़ो, तुम तो दूसरी सूरा पहले ही से जानती हो।"

इसलिए सलमा ने सूरा कौसर पढ़ी—

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝١

इन्ना अअ्तैना कल-कौसर।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢

फ़सल्लि लि रब्बि-क वनहर।

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣

इन्-न शानि अ-क हुवल-अबतर।

यह पढ़कर सलमा ने पूछा, "क्या मुझे अब फिर से पहली रकअत की तरह जारी रखना चाहिए?"

उसकी अम्मी ने कहा, "हाँ, अब रुकू करो और सुब्हा-न रब्बियल-अज़ीम कहो।

सलमा झुकी और सीधी खड़ी हुई उसके बाद उसने सजदा किया। सजदे में उसने सुब्हा-न रब्बियल-आला पढ़ा। वह बहुत खुश थी कि उसने दूसरी रकअत भी पूरी कर ली।

उसकी अम्मी भी खुश थीं, उन्होंने कहा, "हाँ तुमने दूसरी रकअत पूरी कर ली। याद रखो कि सुबह की नमाज़ में दो रकअतें होती हैं। अब हम कुछ और दुआओं के साथ नमाज़ ख़त्म करेंगे। अब हमें अपने पैरों पर बैठना है।

सलमा अपने पैरों पर बैठ गई और अपनी अम्मी के साथ-साथ दोहराती रही—

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु।

इसका मतलब यह है कि "मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं है और मैं गवाही देती हूँ कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।"

सलमा की अम्मी ने कहा, "इसके अलावा अभी और भी पढ़ना है, लेकिन तुम परेशान न हो, जब हम साथ में नमाज़ पढ़ा करेंगे तो तुम मेरे साथ दोहराया करना। इससे तुम्हें याद हो जाएगा।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ○

"अल्लाहुम्-म सल्लि अला मुहम्मदिवं व अला आलि मुहम्मद।

इसका मतलब है कि "ऐ अल्लाह मुहम्मद और उनके पैरोकारों पर सलामती कर।"

सलमा ने अपनी अम्मी की नक़ल करते हुए पहले दाईं तरफ़ फिर बाईं तरफ़ 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' कहते हुए मुँह फेरा।

इसके साथ-साथ हम दुआ करते हैं कि "ऐ अल्लाह हर एक पर अपनी

सलामती नाज़िल कर।" यह कहकर अम्मी ने सलमा को अपनी गोद में ले लिया और कहा, "मेरी प्यारी बच्ची मुझे तुमपर नाज़ है, क्योंकि तुम्हें पहले से मालूम है कि नमाज़ कैसे पढ़ी जाती है। अब हम रोज़ाना इसी तरह साथ-साथ नमाज़ पढ़ा करेंगे। जल्दी ही हम तुम्हारे अब्बू को बताएँगे कि उनकी बेटी कितनी अच्छी और मेहनतकश मुस्लिम बच्ची है।"

सलमा ने कहा, "हाँ-हाँ, लेकिन उससे पहले मुझे आख़िरवाली बात को याद करना है, ताकि वह मुझे याद रहे, मैं उसे कभी न भूल पाऊँ!"

"इस बात को हमेशा याद रखो कि जो कुछ तुम याद करती हो उसका मतलब भी तुम्हें याद रहे," अम्मी ने कहा। "हालाँकि हम भी दुनिया के और मुसलमानों की तरह अरबी में ही नमाज़ पढ़ते हैं, लेकिन हमें यह ज़रूर मालूम होना चाहिए कि हम क्या पढ़ रहे हैं।" अम्मी ने सलमा के बालों में प्यार से हाथ डालते हुए कहा।

सलमा बहुत ख़ुश थी। सलमा ने तीन दिनों में बहुत कुछ सीख लिया था। किस तरह वुज़ू करते हैं और किस तरह अपने-आपको नमाज़ के लिए तैयार करते हैं। जब वह हर दिन अपने अम्मी-अब्बू के साथ ऐसा करेगी तो उसे पूरी तरह याद हो जाएगा।

उसके लिए यह सबकुछ करना बिलकुल भी मुश्किल नहीं था, क्योंकि उसकी अम्मी ने बहुत साफ़-साफ़ और आसान तरीक़े से उसे बता दिया था। बिलकुल उसी तरह जिस तरह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्का और मदीना में मुसलमानों को करके बताया था। उन मुसलमानों ने फिर अपने बच्चों को सिखाया और फिर इसी तरह हर नस्ल में ऐसा ही होता रहा। एक दिन सलमा भी अपने बच्चों को यह सबकुछ सिखाएगी, ताकि वे भी अच्छे मुस्लिम बनें और वे भी जान सकें कि अपने बच्चों को किस तरह सिखाया जाता है।

रोज़ा-1

कुछ ही दिनों पहले इसमाईल चाचा आए थे। वे बहुत कम दिनों के लिए आए थे, ज़्यादा दिन वे रुक नहीं सके।

चाचा इसमाईल ने सलमा और हसन को बताया कि रोज़ों का महीना शुरू होनेवाला है और मैं उन दिनों अपने घर में ही रहना पसन्द करूँगा।

हसन और सलमा ने कहा, "हमें रोज़ों के बारे में कुछ बताइए।"

चाचा इसमाईल ने ख़ुशी से बताना शुरू किया, "जैसे ही रोज़ों का महीना आता है भारत, पाकिस्तान, अरब, यूरोप और पूरी दुनिया में मुसलमान रोज़े रखने शुरू कर देते हैं। बड़ों के साथ आप लोग भी कुछ दिनों के रोज़े रख सकते हैं। पूरे महीने के रोज़े रखना अभी आप लोगों के लिए मुश्किल हो जाएँगे। लेकिन जब आप लोग बड़े हो जाएँगे तो फिर कोई परेशानी नहीं होगी।"

हसन ने पूछा, "रोज़ा क्या है?"

चाचा इसमाईल ने जवाब दिया, "रोज़े का मतलब है कोई भी चीज़ खाने और पीने से रुके रहना।"

"कुछ भी खाने-पीने से रुके रहना!" हसन और सलमा को बड़ी हैरानी हुई।

"हाँ-हाँ बिलकुल कुछ भी नहीं," बच्चों की हैरानी को देखकर चाचा इसमाईल ने बताना शुरू किया, "ऐसा बिलकुल नहीं है कि दिन-भर कुछ भी खाने-पीने से रुके रहना कोई मुश्किल काम है। हम रात में खा-पी सकते हैं। यानी रमज़ान के महीने में हम सुबह सवेरे से लेकर शाम के सूरज डूबने तक रोज़ा रखते हैं।"

"हम रोज़ा क्यों रखते हैं?" सलमा ने पूछा।

चाचा इसमाईल ने बताया, "रोज़े से हम बहुत सारी चीज़ें सीखते हैं, जैसे कि अल्लाह ने हमको कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें अता की हैं। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने इन चीज़ों के बारे में हम को बहुत अच्छी तरह समझाया है। अल्लाह ने हमारे लिए इतनी चीज़ें पैदा की हैं कि वे हमारे खाने को पूरे साल के लिए काफ़ी हैं। इसलिए रमज़ान का महीना हमें हर साल याद दिलाता है कि खाने के लिए जो कुछ अल्लाह ने हमको दिया है हम उसके लिए उसका शुक्र अदा करें। दूसरे शब्दों में रोज़े के ज़रिए से हमें मालूम होता है कि खाना जो हम खाते हैं उसकी क़ीमत क्या है। अगर हम दिन में खाना न खाएँ और शाम तक खाने का इन्तिज़ार करना पड़ जाए तो हमें मालूम हो जाएगा कि खाने की क्या क़ीमत है।"

चाचा इसमाईल ने जो कुछ कहा था उसपर सलमा ने ग़ौर-फ़िक्र किया और उसने रज़ामन्दी जताई। सलमा ने कहा, "मुझे मालूम है कि जितनी मिठाइयाँ और टॉफ़ियाँ मैं रोज़ खाती हूँ अगर उतनी ही मिठाइयाँ और टॉफ़ियाँ कुछ दिन तक न मिलें तो पता लग जाएगा कि वे मुझे कितनी पसन्द हैं।"

"बिलकुल ठीक कहा सलमा!" चाचा इसमाईल ने कहा, "लेकिन रोज़ा रखने की कुछ दूसरी वजहें भी हैं। जब हम रोज़ा रखते हैं तो हम पूरे दिन बिना कुछ खाए-पिए रहना सीखते हैं। यह बहुत ही फ़ायदेमन्द तजरिबा होता है। क्योंकि अगर कोई दिन ऐसा आए जबकि आपके पास खाने के लिए कुछ न हो तो आपको इतनी जल्दी भूख ही नहीं लगेगी। इसलिए आपको बिलकुल भी परेशानी नहीं होगी, क्योंकि आपको मालूम होगा कि आप रमज़ान के महीने में इस तरह की भूख पहले ही बरदाश्त कर चुके हैं। तब आप बहुत ही सब्र के साथ खाने का इन्तिज़ार करेंगे।

हसन बोला, "चाचा-जान! आपने बिलकुल सही कहा। एक दिन जब मैं स्कूल गया तो मैं खाना ले जाना भूल गया और जब लंच का वक़्त हुआ तो मुझे बहुत भूख लगी। लेकिन अगर मैंने रोज़े रखने शुरू कर दिए होते और मैं भूख को बरदाश्त करना सीख गया होता तो फिर उस वक़्त मुझे इतनी भूख महसूस नहीं होती।"

चाचा इसमाईल हँसे। "बिलकुल सही", उन्होंने कहा, "लेकिन सिर्फ़ यही बात नहीं है। रोज़ा रखने की इससे भी बेहतर एक और वजह है। जब हम भूखे रहते हैं तो हमें उन ग़रीब लोगों का एहसास होता है जिनको वक़्त पर खाना नहीं मिल पाता है और वे भुखमरी के क़रीब होते हैं।"

जब हसन ने यह सुना तो उसे बहुत दुख हुआ कि "यह कैसे मुमकिन है कि लोगों के पास खाने के लिए कुछ न हो?" लेकिन तभी उसे उन बच्चों की याद आई जिनके बारे में उसने सुना था जो रोज़ाना भूखे रहते हैं या उनके पास खाने के लिए बहुत कम चीज़ें होती हैं। हसन को यह भी याद आया कि जब वह रात का खाना खा रहा था तभी उसके अम्मी-अब्बू ने उससे कहा था कि "तुम्हें खाना बरबाद नहीं करना चाहिए, यह बहुत ही बुरी बात है। दुनिया में बहुत-से लोग ऐसे हैं जिनके पास खाने को कुछ भी नहीं है।"

चाचा इसमाईल ने कहा, "इससे भी ज़्यादा यह कि जब हम रोज़ा रखते हैं तो सिर्फ़ उन लोगों के बारे में नहीं सोचते जिनके पास खाने को कुछ नहीं है। हम खुद भी पूरे दिन कुछ नहीं खाते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हम कम खाना खा रहे हैं, इसलिए कुछ खाना बचा पा रहे हैं। यह बचा हुआ खाना उन लोगों को दे दिया जाना चाहिए जो भूखे हैं। इसलिए रोज़े का मतलब यह भी हुआ कि हम कम खाएँ, ताकि ग़रीबों की मदद कर सकें।"

हसन और सलमा ने कहा, "यह बहुत अच्छा आइडिया है। अबकी बार जब रमज़ान आएगा तो हम भी रोज़ा रखेंगे। रोज़े के दौरान हम अम्मी और अब्बू से कह सकते हैं वे कुछ पैसा जमा करें और उन ग़रीबों को दे दें जो भूखे रह जाते हैं। बाद में, जब हम बड़े हो जाएँगे तो हम पूरे महीने के रोज़े रखेंगे और फिर कुछ और ज़्यादा ग़रीबों की मदद जमा कर सकेंगे।

अध्याय-6

रोज़ा-2

वक़्त गुज़रता गया और रमज़ान का महीना आ गया। चाचा इसमाईल पहले ही घर चले गए थे। हसन और सलमा ने देखा कि उनके अम्मी और अब्बू बहुत सवेरे से ही उठ गए हैं। फिर उन्हें किचन में जाते हुए देखा। अभी रात ही थी और वे दोनों कुछ खा रहे थे।

हसन और सलमा ने भी उनके साथ जाकर खाने का फ़ैसला किया। उन्हें मालूम हो गया था कि रोज़ा के लिए उनके अम्मी-अब्बू सहरी खा रहे हैं। उन्होंने कहा, "हम भी आपके साथ सहरी खाना चाहते हैं।"

अम्मी और अब्बू के लिए यह बहुत ही ख़ुशी की बात थी। वे अपने बच्चों के बारे में ऐसा ही सोचते थे। इसलिए वे सब बैठ गए और सबने मिलकर सहरी की। उसके बाद उन्होंने सुबह की नमाज़ अदा की। फिर बच्चे सोने के लिए चले गए।

थोड़ी ही देर के बाद हसन को स्कूल जाने के लिए उठना था। इस बार उसके लिए कोई नाश्ता नहीं था और न ही स्कूल ले जाने के लिए कोई लंच। हसन को भूख लगी थी, लेकिन उसने इस बारे में कुछ भी नहीं कहा। जब दोपहर का वक़्त हुआ तो उसे और तेज़ भूख लगी, लेकिन उसने चाचा इसमाईल के बारे में सोचा जो कि अपने घर वापस चले गए थे। उनके यहाँ भी मुसलमानों ने रोज़ा रखा होगा और चाचा इसमाईल भी मेरी ही तरह भूखे होंगे। हसन ने उन बातों को भी याद किया जो चाचा इसमाईल ने बताई थीं कि ग़रीब लोग तो रोज़ भूखे रहते हैं। हसन को यह बात मालूम थी कि शाम को खाने-पीने के लिए उसको कुछ-न-कुछ तो इनशा-अल्लाह मिलेगा ही, और उससे वह अपनी भूख-प्यास मिटा सकता है।

जैसे ही शाम हुई अम्मी ने मेज़ पर खाने के लिए कुछ चीज़ें रख दीं। सुबह के खाने को सहरी कहा जाता है और शाम के कुछ खाने को इफ़्तार।

घर के सब लोग इफ़तार करने के लिए मेज़ पर बैठ गए और खाना शुरू कर दिया। उनकी भूख बहुत जल्दी ही ख़त्म हो गई। हसन और सलमा बहुत ख़ुश हुए। रोज़े का उनका पहला दिन अच्छी तरह गुज़र गया।

फिर उन्होंने रात का खाना खाया। खाना बहुत ही मज़ेदार लगा और हरेक ने ख़ूब मज़े से खाया। उसके बाद बच्चे जल्दी ही सोने के लिए बिस्तर पर चले गए। हसन बहुत थक गया था, लेकिन सोने से पहले उसे चाचा इसमाईल की बातें फिर से याद आ गईं। उन्होंने मुसलमानों के रोज़े रखने की जो वजह बताई थी वह यह थी कि वे इस लायक़ हो जाएँ कि अपने खाने में ग़रीबों को भी शरीक करें।

हसन इस बात के लिए अल्लाह का शुक्र अदा कर रहा था कि कम-से-कम शाम के वक़्त उसको खाने को तो मिला। बहुत-से ग़रीब लोग ऐसे भी हैं जिनको वह भी नहीं मिलता। उन्हें तो शाम को भी भूखा ही रहना पड़ता है। हसन ने फिर अपने दिल में कहा, "मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार हूँ जिसने मुझे खाने के लिए दिया।"

अभी वह सोने जा ही रहा था कि अचानक उसे कुछ याद आया। वह अपने बेड से उठा और अम्मी-अब्बू के पास गया और कहने लगा, "मुझे सहरी में उठाना मत भूलना। मुझे कल भी रोज़ा रखना है, ताकि ग़रीबों को कुछ और ज़्यादा खाना मिल जाए।"

उसके बाद वह कम्बल में मुँह डालकर सो गया।

रोज़ा-3

सलमा भी अगली सुबह सवेरे उठ गई। सहरी खाने के बाद उसकी अम्मी ने उसे बताया, "रोज़ा रखने से पहले नीयत भी करनी चाहिए।"

बच्चों ने पूछा, "यह नीयत क्या है?"

"नीयत का मतलब है इरादा करना," अम्मी ने कहा। "जब हम रोज़ा रखते हैं तो हम कहते हैं कि मैं इस दिन पूरे दिन का रोज़ा रखने जा रहा हूँ या रही हूँ, यह कहकर हम शाम तक कुछ नहीं खाते-पीते हैं।"

उसी दिन शाम को अम्मी ने हसन और सलमा से कहा कि इफ़तार के बाद हमें दुआ पढ़नी चाहिए। फिर उन्होंने वह दुआ बताई।

अल्लाहुम-म ल-क सुमतु व अला रिज़्क़ि-क अफ़-तरतु।

"ऐ अल्लाह! मैंने तेरे ही लिए रोज़ा रखा और तेरे ही दिए हुए रिज़्क़ से इफ़तार किया।"

फिर रात के खाने के बाद अम्मी ने बच्चों को लै-लतुल-क़द्र के बारे में बताया कि "लै-लतुल-क़द्र रमज़ान की आख़िरी रातों में से एक रात है। इस रात हम देर तक इबादत करते हैं। इस रात में फ़रिश्ते जिबरील (अलैहि०) ने पहली बार अल्लाह का पैग़ाम लोगों तक पहुँचाने के लिए मुहम्मद (सल्ल०) को सुनाया। उसने नबी (सल्ल०) से कहा कि लोगों तक यह पैग़ाम पहुँचाएँ कि अल्लाह ने ही इनसान को पैदा किया है। इसलिए इनसान नेक काम करे। अल्लाह की इबादत करें और ग़रीबों और बीमारों की मदद करें।

यह सुनकर हसन को समझ में आ गया कि फ़रिश्ते जिबरील ने क्या कहा था। हमें ग़रीबों की मदद करनी चाहिए, हमें उनको खाने के लिए कुछ-न-कुछ देना चाहिए। हसन और सलमा अब लै-लतुल-क़द्र का इन्तिज़ार करने लगे कि वह आए और वे रात को देर तक अल्लाह की इबादत करें।

अध्याय-8

ज़कात

जब रमज़ान का महीना ख़त्म हो गया तो एक बहुत बड़ा जश्न था। हरेक बहुत ख़ुश था कि उसने रमज़ान के महीने में रोज़े रखे।

बहुत तरह के खानों को देखकर हसन हैरान था। उसने देखा कि इस मौक़े पर बहुत-से लोग उसके घर आए। उसके दिमाग़ में यह बात आई कि अम्मी ने इतना सारा पैसा खाने-पीने की चीज़ों पर ख़र्च कर डाला। मुझे उम्मीद है कि उन्होंने वे सारे पैसे जो हमने ग़रीबों को देने के लिए बचाए थे ख़र्च नहीं किए होंगे।

सुबह को अब्बू ने हसन से अपने और दूसरे लोगों के साथ मस्जिद में नमाज़ अदा करने के लिए चलने को कहा।

रास्ते में हसन ने अब्बू से पूछा, "उन पैसों का क्या हुआ जो हमने बचाकर रखे थे? क्या हम उन्हें ग़रीबों को नहीं देंगे?"

अब्बू ने उसे यक़ीन दिलाया, "हाँ क्यों नहीं! अस्ल में उन्हें हम पहले ही ज़रूरतमन्दों को दे चुके हैं। जैसा कि मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा है कि हमें वे पैसे ईद की नमाज़ अदा करने से पहले दे देना चाहिए। लेकिन यह सब काफ़ी नहीं है। हम उन्हें वह खाना भी पहुँचाएँगे जो तुम्हारी अम्मी ने बनाया है। यहाँ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बहुत ग़रीब हैं, उनकी ज़िन्दगी बहुत बेहतर नहीं है। इसलिए जब उनको त्योहार का खाना मिलेगा तो वे बहुत ख़ुश होंगे।

हसन ने पूछा, "कोई आदमी किसी ग़रीब की मदद किस तरह कर सकता है?"

अब्बू ने कहा, "ठीक है, जब हम मस्जिद से अपने घर को जाएँगे तब मैं तुम्हें इस बारे में सबकुछ बताऊँगा।"

मस्जिद में बहुत-से लोग थे। मर्द मस्जिद में आगे की तरफ़ थे और

औरतें मस्जिद में पीछे की तरफ़ थीं। हसन अपने अब्बू के साथ फ़र्श पर बैठ गया। नमाज़ के बाद सबने एक-दूसरे को ईद-मुबारक कहा। रमज़ान के महीने के बाद जो यह दिन आता है उसे ईदुल-फ़ित्र कहते हैं।

मस्जिद से वापसी के रास्ते में अब्बू ने हसन से कहा, "अब मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ कि एक आदमी किसी ग़रीब की मदद किस तरह कर सकता है। क़ुरआन के मुताबिक़, जिन लोगों के पास अपनी ज़िन्दगी की गुज़र-बसर के लिए काफ़ी माल है उन्हें हर साल अपनी चीज़ों में से कुछ ग़रीबों को देना चाहिए। पुराने ज़माने में लोगों के पास ऊँट, बकरी और भेड़ जैसे जानवरों के झुंड होते थे या अनाज, सब्ज़ियाँ और फल हुआ करते थे। इन्हीं में का कुछ हिस्सा ग़रीबों को दिया जाता था। इसी को हम 'ज़कात' कहते हैं। आजकल हम ज़कात आम तौर से पैसे की शक्ल में देते हैं। अगर हमारे पास सौ रुपये हैं तो हम ढाई रुपये यानी ढाई फ़ीसद ज़कात देते हैं।"

हसन को कुछ समझ में नहीं आया। उसने पूछा, "लेकिन अगर हम ग़रीब लोगों को पैसे देते हैं तो अभी भी इतने ज़्यादा लोग ग़रीब क्यों हैं? अगर मालदार लोग हमेशा ग़रीबों को देते हैं तो यक़ीनन कोई भी आदमी ग़रीब नहीं रहना चाहिए।"

अब्बू ने कहा, "मुझे यह बताने में इतना अफ़सोस हो रहा है कि यह इतना आसान नहीं है जितना नज़र आता है। बदक़िस्मती से अल्लाह के इस क़ानून को पूरी तरह माना नहीं जाता है। मालदार लोग ख़ास तौर से इस क़ानून पर अमल नहीं करते, क्योंकि वे और ज़्यादा मालदार होना चाहते हैं, इसलिए वे ग़रीबों को किसी भी तरह देने से इनकार कर देते हैं।"

"मैंने यह बात पहले भी सुनी है।" हसन ने कहा, "कुछ इसी तरह की बात मुहम्मद (सल्ल॰) के ज़माने में मक्का में भी हुई थी न? ये मालदार लोग इतने ख़ुदग़र्ज़ क्यों होते हैं?"

अब्बू ने कहा, "ठीक कहा तुमने, जब एक आदमी मालदार होता है तो वह सोचता है कि वह अपनी दौलत से दुनिया की हर चीज़ ख़रीद लेगा, इसलिए वह अल्लाह के हुक्मों पर अमल करने की सोच ही नहीं पाता। वह

सिर्फ़ अपने और अपने माल के बारे में सोचता है।"

हसन ने कहा, "अब्बू, मुझे यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आई।"

"अभी समझाता हूँ," अब्बू ने कहा, "क्या तुम जानते हो कि कलिमा-ए-शहादत किस तरह शुरू होता है?"

"हाँ," हसन ने कहा, "अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह, इसका मतलब है कि मैं गवाही देता हूँ कि कोई ख़ुदा नहीं है सिवाय अल्लाह के।"

"हाँ, इस बात में इशारा है!" अब्बू ने कहा, "तुम जानते हो हसन, जब लोग मालदार हो जाते हैं तो क्या चीज़ भूल जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि सिर्फ़ अल्लाह ही सबसे बड़ा और सबसे ज़्यादा ताक़तवर है। चूँकि उनके पास बहुत ज़्यादा पैसा है इसलिए वे सोचते हैं कि वे भी बड़े और ताक़तवर हैं।"

हसन ने कुछ देर के लिए सोचा, अब्बू ने जो कुछ कहा था उसे समझने की कोशिश की। फिर उसने कहा, "ज़कात देने का मतलब है ग़रीबों को देना, ताकि ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए उनके पास भी ज़रूरत के मुताबिक़ पैसे हों। दूसरी तरफ़ इसका मतलब यह भी है कि वे लोग जो अपने पैसे ग़रीबों को देते हैं तो वे इससे इतने मालदार नहीं हो सकेंगे कि अल्लाह को भूल जाएँ। क्या मेरी बात सही है?"

अब्बू ने कहा, "हाँ बेटा, तुमने बिलकुल सही कहा। हम हर साल ज़कात देते हैं। यह हमपर कोई भारी बोझ नहीं महसूस होता, लेकिन बहुत-से मालदार लोग हैं जो ज़कात नहीं देना चाहते। हम अल्लाह का हुक्म मानते हैं और ज़कात देते हैं। दूसरे लोग क्या करते हैं यह उनका अपना मामला है। हम उनके जैसा कोई काम नहीं करेंगे।"

हसन ने हाँ में सिर हिलाया और कहा, "हम रोज़ा रखते हैं और ग़रीबों की मदद के लिए ज़कात देते हैं। लेकिन हमारी दोस्ती भी ऐसे लोगों से हो जो ग़रीबों की मदद करते हैं। जिस तरह हम ग़रीबों की मदद करते हैं उसी तरह वे भी ग़रीबों की मदद करके अल्लाह के हुक्मों को माननेवाले होंगे, और जो लोग अल्लाह का हुक्म मानते हों वे हमारे दोस्त हैं।

अध्याय-9

हज

चाचा इसमाईल तीन महीनों के बाद दूसरी बार फिर आए। इस बार फ़ातिमा आंटी को भी अपने साथ लाए थे। वे दोनों अभी-अभी मक्का से हज करके लौटे थे। हज अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जो हज या ज़ियारत पर जाने के लिए बोला जाता है।

चाचा इसमाईल ने कहा, "मक्का में बहुत सारे लोग थे। वे अलग-अलग देशों से आए थे।

"हाँ," फ़ातिमा आंटी ने कहा, "मक्का में मर्द और औरतें दोनों थे, क्योंकि क़ुरआन में कहा गया है कि उन्हें वहाँ जाना चाहिए। जैसा कि आप जानते हैं, इस्लाम के मानी हैं कि तुम कलिमा-ए-शहादत कहो (यानी इस बात का इक़रार और एलान करो कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है और मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं।), और दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करो, रमज़ान के महीने में रोज़े रखो, ग़रीबों को ज़कात दो और हज करने के लिए मक्का जाओ।"

"आप लोगों ने वहाँ क्या किया?" सलमा यह जानने के लिए बेचैन थी।

चाचा इसमाईल ने समझाते हुए बताया, "हमने अपना हज उसी तरह पूरा किया जिस तरह मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया था। सबसे पहले हम अरफ़ात के क़रीब सबसे छोटी पहाड़ी पर गए और वहाँ पूरे दिन अल्लाह से दुआएँ करते रहे। शाम को फिर हमने चलना शुरू किया यहाँ तक कि हम एक घाटी पर पहुँच गए जहाँ हमने कुछ छोटी-छोटी कंकरियाँ जमा कीं। अगले दिन हम मिना आए, जो कि मक्का के क़रीब एक छोटा-सा गाँव है। मिना में पत्थर के तीन बड़े खम्भे हैं। जो कंकरियाँ हमने जमा की थीं उन तीनों खम्भों पर बारी-बारी से मारा। जब हम ऐसा कर रहे थे तो हमने दिल

से सोचा कि हम इन कंकरियों को इबलीस पर मार रहे हैं, ताकि वह हमारा पीछा छोड़ दे और हम सुकून से रह सकें। जब यह सब हो गया तो हमने भेड़ की क़ुरबानी की।"

"मैं जानता हूँ कि आपने ऐसा क्यों किया," हसन ने बीच में ही बोलते हुए कहा, "ये सब हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की याद में था।"

फ़ातिमा आंटी हसन की बात पर मुस्कुराईं और कहा, "तुमने बिलकुल सही कहा, बहुत ख़ूब! तुम तो पहले ही से बहुत कुछ जानते हो। तुम मुझे इबराहीम (अलैहि०) की कहानी बाद में सुना सकते हो। ठीक है!"

लेकिन हज के बारे में बताने के लिए बहुत कुछ बाक़ी था, इसलिए चाचा इसमाईल ने बताना जारी रखा, "उसके बाद हम मक्का गए, जहाँ काबा है। काबा मस्जिद के बिलकुल बीच में बना हुआ है। पत्थर से बना हुआ यह एक बड़ा सा घर है जिसमें सपाट छत है और कोई खिड़की नहीं है। अस्ल में यह एक घर जैसा दिखता है, जिसमें चार दीवारें, छत और ज़मीन की सतहें बराबर होती हैं। हमने काबा के चारों तरफ़ सात चक्कर लगाए, जैसा कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने हमें बताया था।"

"पैग़म्बर इबराहीम (अलैहि०) और उनके बेटे इसमाईल (अलैहि०) ने सबसे पहले काबा बनाया था", सलमा ने कहा।

"बिलकुल ठीक कहा," फ़ातिमा आंटी ने कहा, "लेकिन क्या तुम यह भी जानती हो कि उन्होंने यह घर क्यों बनाया?"

सलमा ने कहा, "नहीं, लेकिन आप हमें बताएँ।"

चाचा इसमाईल ने हमें बताया, "उन्होंने इस पत्थर के घर को इसलिए बनाया, क्योंकि वे अल्लाह के नबी थे और अल्लाह ने उन्हें ऐसा करने का हुक्म दिया था। उन्होंने अल्लाह के उस हुक्म को पूरा किया, और वे चाहते थे कि दूसरे लोग भी यहाँ आएँ, वे अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न हों। इसी लिए मुसलमान हज करने के लिए वहाँ जाते हैं।"

सलमा ने पूछा, "क्या आप इस घर के अन्दर जा सकते हैं।"

चाचा इसमाईल ने जवाब दिया, "इसकी ज़रूरत नहीं है। यह अस्ल में ऐसा घर नहीं है, जिसमें कोई रहता हो। इसको बाहर से ही देख लेना काफ़ी है। जब आप काबा के चारों तरफ़ चक्कर लगाते हैं तो आपको याद दिलाया जाता है कि अल्लाह ने इनसानों की इस्लाह हमेशा अपने पैग़म्बरों के ज़रिए से की और पैग़ाम भेजे। उनमें सबसे पहले पैग़म्बर हज़रत आदम (अलैहि॰) थे और आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) हैं। सभी नबियों ने एक ही बात कही कि ऐ लोगो, एक अल्लाह पर ईमान लाओ। उसी ने तुमको पैदा किया और उसी ने पेड़-पौधे और जानवरों को भी पैदा किया, ताकि तुम उन्हें इस्तेमाल करके ज़िन्दगी बसर कर सको। तुम्हें एक अल्लाह ही की इबादत करनी चाहिए और अच्छे काम करने चाहिएँ।

चाचा इसमाईल और फ़ातिमा आंटी मक्का के बारे में बातें करते रहे और हसन और सलमा शौक़ से सुनते रहे। उनके चाचा और आंटी ने वहाँ बहुत-से अलग-अलग तरह के लोग देखे। उनमें कुछ बहुत ही काले रंग के थे, कुछ गोरे थे, और कुछ बहुत ही ज़्यादा गोरे-चिट्टे थे। लेकिन देखने में अलग लगने के बावजूद वे सब लोग आपस में एक-दूसरे को भाई-बहन समझते हैं, क्योंकि वे मुस्लिम हैं, जो एक ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और उस बात को मानते हैं जो मुहम्मद (सल्ल॰) ने उन्हें बताई हैं।

"जब मैं बड़ा हो जाऊँगा," हसन ने मन-ही-मन सोचा, "तो मैं भी मक्का हज करने जाऊँगा।" इन-शा-अल्लाह!

अध्याय-10

इस्लाम के पाँच सुतून

जिस तरह किसी मकान के सुतून होते हैं, उसी तरह इस्लाम के भी पाँच सुतून हैं–

1. कलिमाए-शहादत अदा करना
2. दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करना
3. रमज़ान के महीने के रोज़े रखना
4. ज़रूरतमन्दों को ज़कात देना
5. मक्का हज करने के लिए जाना

अगर सुतून मज़बूत होंगे तो इमारत भी मज़बूत होगी। अगर सभी मुसलमान इन पाँच बातों पर अमल करें तो इस्लाम मज़बूत होगा।

भाग-3

सलीक़ा और आदाब

सलीक़ा और आदाब

अध्याय-1

मेहमान

चाचा इसमाईल और फ़ातिमा आंटी दोबारा मिलने आए। इस बार वे अपने साथ अपने दो बच्चों, बेटे अली और बेटी जमीला को भी लेकर आए। वे हसन और सलमा ही की उम्र के थे।

जैसे ही वे घर के अन्दर दाख़िल हुए, उन्होंने कहा, "अस्सलामु-अलैकुम।" हसन और सलमा ने फ़ौरन जवाब में कहा, "व अलैकुम-अस्सलाम।" उन्हें मालूम था कि एक बार पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा था कि हमें एक-दूसरे को सलाम करना चाहिए और सलामती की दुआ करनी चाहिए। "अस्सलामु-अलैकुम" का मतलब है "आप पर सलामती हो" और जवाब में "वअलैकुम-अस्सलाम" कहा जाता है जिसके मानी "आप पर भी सलामती हो।"

बच्चे आपस में खेलने लगे। हालाँकि हसन और सलमा सिर्फ़ हिन्दी बोलना जानते थे और अली और जमीला हिन्दी बोलना नहीं जानते थे। इसके बावजूद वे आपस में ख़ूब अच्छी तरह खेल रहे थे।

थोड़ी देर के बाद बच्चों को खाने के लिए बुलाया गया और सलमा ने अपने मेहमानों को बाथरूम दिखाया जहाँ वे अपने हाथ धो सकते थे। उसके बाद वे सब एक साथ जाकर मेज़ पर बैठ गए। खाने से पहले सबने 'बिसमिल्लाह' कहा।

जब हसन ने यह सुना तो उसने चाचा इसमाईल से पूछा, "हम ऐसा क्यों पढ़ते हैं?"

चाचा इसमाईल ने जवाब दिया, "इसका मतलब होता है 'अल्लाह के नाम से'। खाना शुरू करने से पहले हम बिसमिल्लाह कहते हैं इसलिए क्योंकि जो खाना हम खाते हैं वह अल्लाह ही की तरफ़ से रिज़्क़ के तौर पर आता है। इसलिए हम खाना शुरू करने से पहले अल्लाह को याद करते हैं।

जब हम खाना खा चुकते हैं तो हम फिर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और कहते हैं 'अल-हम्दुलिल्लाह'।"

इसका मतलब है : (शुक्र है अल्लाह का), सलमा ने कहा।

फ़ातिमा आंटी बोलीं, "बिलकुल सही कहा आपने। हमें खाने के बाद अल्लाह का शुक्र ज़रूर अदा करना चाहिए, क्योंकि वह खाना अल्लाह ही की तरफ़ से आता है। लेकिन इस वक़्त बहुत भूख लग रही है, अब खाना खाओ!"

सबने मिलकर मज़ेदार खाने का मज़ा लिया। अम्मी ने मेहमानों के लिए कुछ ख़ास क़िस्म का खाना अलग से बनाया था। जब वे खाना खा चुके तो सबने कहा, "अल-हम्दुलिल्लाह" यानी तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।

"खाने के बाद की एक दुआ भी है," फ़ातिमा आंटी ने कहा, "और यह बहुत आसान है : अल-हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-मना व सक़ाना व ज-अ-लना मिनल-मुसलिमीन। इसका मतलब है कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमें खाने और पीने के लिए दिया और हमें अपना फ़रमाँबरदार बनाया।"

हसन ने कहा, "यह तो बहुत ही अच्छी दुआ है! मैं इसको अभी याद कर लूँगा।"

फिर उसने उसे कुछ देर तक अली और जमीला के साथ दोहराया, और फिर सलमा ने भी उसे याद कर लिया।

अध्याय-2

मसजिद

मसजिद एक ऐसा घर है जिसमें मुसलमान एक अल्लाह की इबादत करते हैं। कुछ मसजिदें आम घरों की तरह दिखती हैं, लेकिन ज़्यादातर में लम्बा टावर होता है जिसे मीनार कहते हैं। जब नमाज़ का वक़्त होता है तो मुअज़्ज़िन (नमाज़ की तरफ़ बुलानेवाला) उस मीनार पर चढ़ता है और वहाँ से अज़ान कहता है। अज़ान के ज़रिए से लोगों को जमाअत से मसजिद में नमाज़ पढ़ने के लिए बुलाया जाता है।

मसजिद में कुछ ज़रूरी चीज़ें होती हैं। एक बड़ी मसजिद में आम तौर से पानी का इन्तिज़ाम होता है, बहुत-सी टोंटियाँ लगी होती हैं, जिससे मुसलमान नमाज़ पढ़ने से पहले वुज़ू करते हैं।

जब हम मसजिद में दाख़िल हों तो अपने जूतों या चप्पलों को उतार लेना चाहिए। क्योंकि मसजिद के अन्दर फ़र्श पर दरियाँ या चटाइयाँ बिछी होती हैं। किसी को भी उनपर जूतों या चप्पलों के साथ नहीं चलना चाहिए, क्योंकि नमाज़ के लिए जगह, फ़र्श और दरियाँ वग़ैरा पाक-साफ़ होने चाहिएँ। जब हम नमाज़ अदा करते हैं तो हमारा माथा फ़र्श पर टिकता है, इसलिए ज़रूरी है कि फ़र्श को साफ़ रखा जाए और किसी को भी जूते या चप्पल वग़ैरा पहनकर अन्दर आने की इजाज़त न दी जाए।

जिस हॉल में नमाज़ अदा की जाती है उसमें आगे की तरफ़ को जगह बढ़ी हुई होती है, इसे मेहराब कहते हैं। मेहराब से मालूम होता है कि क़िबला किधर है। जैसा कि आप पहले ही से जानते हैं कि क़िबले की तरफ़ रुख़ करके हम मुसलमान नमाज़ अदा करते हैं। मेहराब जिस तरफ़ होता है उसी तरफ़ मक्का में काबा बना हुआ है। इस मेहराब से ही पता चलता है कि नमाज़ के वक़्त हमारा रुख़ किस तरफ़ हो।

मेहराब में ही कुछ सीढ़ियाँ बनी होती हैं, जिसे मिम्बर कहते हैं। यह

मिम्बर जुमा के दिन के खुतबे (अभिभाषण) के लिए होता है। खुतबा देनेवाला या इमाम मिम्बर की सीढ़ियों पर चढ़कर खुतबा देता है, ताकि लोग आसानी के साथ साफ़ तौर से सुन सकें।

पूरी दुनिया में जहाँ कहीं भी मुसलमान रहते हैं वे मसजिदें बनाते हैं। जब मुहम्मद (सल्ल०) मदीना आए तो पहली चीज़ जो उन्होंने बनाई वह मसजिद ही थी। मसजिद वह जगह है जहाँ मुसलमान मिलकर अल्लाह की इबादत करते हैं।

अज़ान

नमाज़ से पहले अज़ान कही जाती है—

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश्हदु-अल्ला-इला-ह इल्लल्लाह,

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश्हदु-अल्ला-इला-ह इल्लल्लाह।

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु-अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह,

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु-अन्-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ، حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ

हय-य-अलस्सलाह, हय-य-अलस्सलाह।

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ، حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

हय-य-अलल-फ़लाह हय-य-अलल-फ़लाह।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

ला-इला-ह इल्लल्लाह।

इसका मतलब है—

अल्लाह ही बड़ा है। अल्लाह ही बड़ा है।

अल्लाह ही बड़ा है। अल्लाह ही बड़ा है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं।

मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं।

आओ नमाज़ की तरफ़। आओ नमाज़ की तरफ़।

आओ कामयाबी की तरफ़। आओ कामयाबी की तरफ़।

अल्लाह ही बड़ा है। अल्लाह ही बड़ा है।

अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है।

अध्याय-4

जुमा की नमाज़

हर जुमा को अब्बू मसजिद में नमाज़ पढ़ने के लिए जाते हैं। जुमा के दिन की इस नमाज़ को 'सलातुल-जुमा' कहते हैं। यह नमाज़ जमाअत के साथ ही पढ़ी जाती है। इस दिन तमाम मुसलमान अपने शहर की एक मसजिद में जमा होते हैं।

मसजिद जाने से पहले हम वुज़ू करते हैं। बेहतर है कि जुमा की नमाज़ से पहले हम नहा भी लें। जैसे ही मसजिद के दरवाज़े पर पहुँचें तो हम अपने जूते उतार लें। मसजिद के अन्दर हमें या तो नंगे पैर या मोज़े पहनकर ही जाना चाहिए।

जब अब्बू मसजिद पहुँचते हैं तो वहाँ पहले ही से बहुत-से लोग फ़र्श पर बैठे हुए होते हैं और क़ुरआन या तसबीह पढ़ रहे होते हैं। आदमी आगे की तरफ़ बैठते हैं और औरतें पीछे की तरफ़।

जब लोग आ जाते हैं और ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त हो जाता है तो मुअज़्ज़िन खड़े होकर अज़ान देता है, जिसे नमाज़ का बुलावा कहते हैं। वह कहता है : अल्लाह सबसे बड़ा और महान है, मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं, आओ नमाज़ की तरफ़। अब तुम जान चुके हो कि अज़ान के बोल क्या हैं।

फिर इमाम मिम्बर पर जाता है। इमाम भी और मुसलमानों की तरह का ही एक मुसलमान होता है, लेकिन वह क़ुरआन को अच्छी तरह जानता है। मिम्बर में कई सीढ़ियाँ होती हैं, उन्हीं सीढ़ियों पर इमाम चढ़ता है और तक़रीर करता है, ताकि हर आदमी साफ़ तौर से सुन सके। जो तक़रीर इमाम करता है उसे ख़ुतबा कहते हैं। इमाम बताता है कि क़ुरआन में क्या लिखा है और हमें सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और हमेशा अच्छे काम करने चाहिएँ।

खुतबे के बाद नमाज़ पढ़ते हैं। मुअज़्ज़िन दूसरी बार पुकारता है। इसे 'इक़ामत' कहते हैं। जब लोग इस पुकार को सुनते हैं तो जान जाते हैं कि अब नमाज़ शुरू होनेवाली है, अब अगर उन्होंने जल्दी न की तो वे पीछे रह जाएँगे।

फिर इमाम सामने मेहराब में खड़ा हो जाता है। मेहराब दीवार में आगे की तरफ़ को बढ़ी हुई एक जगह होती है, जिससे पता चलता है कि काबा किस तरफ़ है। हम मुसलमान हमेशा काबा की तरफ़ ही रुख़ करके नमाज़ पढ़ते हैं।

तमाम मुसलमान इमाम के पीछे एक लम्बी क़तार बनाकर खड़े हो जाते हैं। अब्बू भी क़तार में खड़े होते हैं। इमाम हाथ उठाकर कहता है, 'अल्लाहु-अकबर'। लोग भी उसके पीछे दोहराते हैं। वे भी हाथ उठाते हैं और कहते हैं, 'अल्लाहु-अकबर।' वे जमाअत के साथ मिलकर दो रकअत नमाज़ अदा करते हैं, जो कि इतनी ही लम्बी होती है जितनी की सुबह की नमाज़।

इमाम उस आदमी को कहते हैं जो नमाज़ पढ़ाता है। बाक़ी लोग जो उसके पीछे होते हैं वे वही करते हैं जो इमाम करता है। पीछे खड़े सब लोग वैसे ही करते हैं इसलिए उनकी नमाज़ आगे-पीछे नहीं होती। नमाज़ के बाद लोग अस्सलामु-अलैकुम कहते हुए अपने चेहरे को दाएँ-बाएँ फेरते हैं, जिसका मतलब होता है कि आप सबपर अल्लाह की सलामती हो। इस तरह जुमा की नमाज़ मुकम्मल हो जाती है।

तसबीह

जब कभी चाचा इसमाईल आते हैं तो बच्चे देखते हैं कि वे नमाज़ पूरी हो जाने के बाद फ़ौरन खड़े नहीं हो जाते, बल्कि वे कुछ देर तसबीह पढ़ने के लिए बैठे रहते हैं। तसबीह का मतलब होता है अल्लाह की तारीफ़ और बड़ाई बयान करना। नमाज़ के बाद चाचा इसमाईल 33 बार 'सुब्हानल्लाह' यानी 'अल्लाह की ज़ात पाक है' कहते हैं, फिर 33 बार 'अल-हम्दुलिल्लाह' कहते हैं जिसका मतलब होता है 'तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।'

उसके बाद 34 बार कहते हैं 'अल्लाहु-अकबर' जिसका मतलब होता है 'अल्लाह ही बड़ा है।'

चाचा इसमाईल यह गिनती उँगलियों पर पूरी करते हैं, जब यह सब हो जाता है तब वे सबसे बाद में दुआ करते हैं और खड़े हो जाते हैं।

दुआ

हसन और सलमा नमाज़ के बाद हमेशा दुआ करते हैं। दुआ का मतलब होता है अल्लाह से माँगना। नबी (सल्ल॰) ने हमें बहुत-सी दुआएँ सिखाई हैं, जिन्हें हम पढ़ सकते हैं, लेकिन हम अपने तौर पर उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी वग़ैरा में भी दुआ कर सकते हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने हमें सुबह और शाम की दुआएँ सिखाई हैं। इसलिए हसन और सलमा सुबह को जब उठते हैं तो वे दुआ करते हैं,

"अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअ्-द मा अमा-तना व इलैहिन्नुशूर।"

"शुक्र है अल्लाह का, जिसने हमें हमारी मौत से जगाया और हम सब अल्लाह ही की तरफ़ पलटनेवाले हैं।"

हसन और सलमा सोने से पहले यह दुआ पढ़ते हैं—

"अल्लाहुम-म बिसमि-क अमूतु व अहया।"

"ऐ अल्लाह! तेरे ही नाम से है मेरा मरना और मेरा जीना।"

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि जब हम सो जाते हैं तो यह बिलकुल ऐसा ही है जैसे कि हम मर गए हैं, क्योंकि सोने के बाद हमें कुछ मालूम ही नहीं रहता कि क्या हो रहा है। अगले दिन सुबह को जब वे जागते हैं तो वे अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं, क्योंकि उसी ने उनको उठाया है।

इसी तरह हम एक दिन मौत के बाद भी उठाए जाएँगे। जिस तरह हम सुबह में नींद से उठे हैं उसी तरह एक दिन मौत के बाद उठेंगे। इसलिए हम इसके लिए अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और हर रोज़ सुबह-शाम दुआ करते हैं।